॥ समर्पण ॥

श्रीमती चन्द्रकुमारी !

आपको नाटक और उपन्यास आदि देखने का बड़ा शौक था, आपने संसार की बहुतेरे रूपक देखे थे। अस्तु अपना रूपक भी आपने संसार को विचित्र रूप से दिखा दिया। उसी आपके विचित्र चरित्र को पुस्तक रूपमें लिख कर आपकी सेवा में सादर सस्नेह समर्पित करता हूं। विश्वास है कि आप अङ्गीकार करेंगी।

एस० एस० गुप्त।



॥ श्रीः ॥

प्रेम का फल

पहिला परिच्छेद ।

आज नवीन सन् का प्रारम्भ है, जनवरी महीने की पहली तारीख है. पौष मास का शुक्ल पक्ष है, सर्दी अधिकता से पड़ रही है, शीतल मन्द सुगन्ध पवन हिलोरे ले रहा है, आकाश बिलकुल स्वच्छ है, चांदनी रात है, चन्द्रमा अपनी सम्पूर्ण सोलह कलाओं से संसार की यावन्मात्र वस्तुओं को आदर्श रूप दिखला रहा है, सुन्दर सुन्दर सरोवरों में कुमुद खिलखिला कर हँस रही हैं, पक्षीगण अपने २ घोंसलों में बसेरा कर चुके हैं, बाजार अच्छे प्रकार से सजा सजाया खुल रहा है । अंग्रेजों के यहां आज न्यूइयर्सडे का त्यौहार है, शहर के सब रईस लोग इन्हें प्रसन्न करने के लिये अनेक प्रकार के, फल, फूल और मेवा मिष्ठान्नों से युक्त डालियां सजा सजा कर भेंट कर रहे हैं, ये लोग आनन्द के साथ नाच, गान और खेल तमाशों में उन्मत्त होकर उमंग ले रहे हैं। अर्थात् आज सभी प्रकार के आनन्द का दिन है। नौ के घण्टे की आवाज टनटन कानों में आ रही है।

ऐसे समय में हम अपने उपन्यासप्रेमियों को एक रायपुर नामक शहर के राजपुरे महल्ले में लिये चलते हैं।

पाठक गण! यहां एक साहू बैजनाथ जी का मकान है, साहू साहब के यहां भी आज उत्सव है, खुशी का ठिकाना नहीं है, साहू साहब का मकान आज अनेक प्रकार के रङ्गीन झाड़, फानूस और हांड़ियों की रोशनी से जगमगा रहा है, तरह २ के मोतिया, चमेली, जुही, केतकी और गुलाब आदि सुगन्धित पुष्पों के गमले यथोचित स्थान पर रक्खे हुए हैं, पुष्पों की सुगन्धि से मकान महक रहा है। दरवाजे पर अनेक प्रकार के बाजे बज रहे हैं, मकान के भीतर अनेक मण्डलियां अपना अपना रङ्ग अलग ही जमा रही हैं, कहीं हारमोनिय बज रहा है, कहीं ग्रामोफोन बज रहा है, कहीं सितार और सारङ्गी बज रही है, कही, मृदङ्ग और ढोलकी की तान लग रही है! कहीं भजन मण्डली का गाना और कहीं वेश्या का नाच हो रहा है। कहीं मण्डेलों का मसखरापन अजब ही आनन्द दिखला रहा है। एक ओर भागवत राय बैठे हुए अपनी माया में मस्त अलग ही लंगोटा बांधे खटाखट माला के दाने सटका रहे हैं सारांश यह है कि साहू साहब के आनन्द का पूरा सामान है।

साहू साहब के सम्बन्धी और मित्रवर्ग आज तरह

तरह के फैशन बना कर आ रहे हैं। पुरुषों का ठाट अलग है और स्त्रियों का ठाट अलग है। पुरुषों में कोई हैट कैप, कोट, पतलून, बास्कट, नकटाई और कालर आदि अंग्रेजी पोशाक और डासन के जूते पहने हुए चुर मुर और खटाखट खटाते खास यूरोपियन बने हुए मानों अभी विलायत से ढल कर आ रहे हैं, कोई आधी अंग्रेजी और आधी वर्तमान हिन्दुस्तानी पोशाक पहन कर आ रहे हैं, कोई बन्दोदार पुरानी चाल का अङ्ग-रखा, आड़ा पायजामा और शिर पर दुपलिया टोपी और पैर में देहली का कामदार जूता पहने हुए आ रहे हैं कोई घाघरेदार पाजामा, चपकन, शिर पर पगड़ी, कन्धे पर दुपट्टा डाले और चपकौआ जूता पहने आ रहे हैं, कोई नीची धोती, चपकन, शिर पर पगड़ी, हाथ में अङ्गोछा और मस्तक पर एक सौ ग्यारह नम्बर का तिलक लगाये खड़ाऊं खटखटाते चले जाते हैं। यह तो हुआ पुरुषों का फेशन अब स्त्रियों का फैशन देखिये, कोई पैरों में मोजे और लुकदार बूट, मेम लोगों के गौन के माफिक दामन कमीज और बास्कट तथा चादर ओढ़े हुए आ रही हैं। कोई गोटे किनारी से बने हुए तरह २ के रङ्गीन और रेशमी वस्त्र और बहुमूल्य आभूषण को धारण करे चली आ रही हैं। कोई रेशमी रङ्गीन फूलदार साड़ी पहिने और कोई बिलकुल साधारण सादे फैशन से ही

आ रही हैं। बालकों के फैशन और भी अजीब २ किस्म के हैं सारांश यह है कि आज साहू साहब के यहां सभी किस्म के फैशनों से युक्त बालक, युवा बृद्ध स्त्री और पुरुषों का निमन्त्रण है।

भोजन का सामान भी बड़े ठाट बाट से हो रहा है, बहुत से स्त्री पुरुष इसी काम में लग रहे हैं। भोजन जिमाने का काम पुरुषों में पुरुष कर रहे हैं और स्त्रियों में स्त्रियां कर रही हैं। पान लगाने का काम एक परम सुन्दरी युवती के सपुर्द है।

सब स्त्री पुरुषोंके एकत्र हो जाने पर भोजन जिमाने का कार्य्य आरम्भ हुआ; नियमानुसार प्रथम ब्राह्मणों को भोजन कराया गया, भोजन को देखकर ब्राह्मण लोग फूल कर कुप्पा बन गये, तारीफ का ठिकाना नहीं रहा, कोई कहता है कि लाला साहब आज के मिष्ठान्नों में तो अजीब लज्जत है, कोई कहता है साहू साहब आज का हलुआ तो बड़ा ही स्वादिष्ट बना है, कोई कहता है कचौरी तो बड़ी ही खस्ता बनी है, इत्यादि। आज साहू साहब की तारीफ का ठिकाना नहीं है निमन्त्रण के सभी ब्राह्मण दक्षिणा ले लेकर साहू साहब को धन्यवाद और जय जय कार से निभूषित करके चल दिये। ब्राह्मण भोजन के पश्चात्

जाति भोजन और मित्रवर्गों को भोजन कराया गया। इन सब के पश्चात् घर के लोगों की बारी आई।

भोजन से निवृत्त होकर सब लोग अपने २ घरों को बिदा हो गये, सिर्फ एक युवक जो इनके खास आदिमियों में से हैं, अपने घर को नहीं गये।

साहू साहब के सोने का कमरा बड़ी ही उत्तमता से सज रहा है इसकी सजावट को देखकर आंखों में चकाचौंध उत्पन्न होती है, कमरा सुनहरी कलई से पुता हुआ है, ऊपर झालरदार कपड़छत लगी हुई है जिसमें तरह तरह के रङ्गीन झाड़ और हाड़ियां लटकी हैं, अनेक प्रकार के रवि वर्म्मा प्रेस के बने हुए बढ़िया २ सुनहरी फूलदार चौखटों में जड़े हुए चित्र लगे हुए हैं, दीवारों पर समेदान और दीवार गीरियां लटक रही हैं, दीवार गीरियों पर तरह २ के खिलौने और गुलदस्ते इत्यादि रक्खे हुए हैं, जमीन पर रेशमी फूलदार गलीचों का फर्श बिछा हुआ है, एक ओर मेज पर जर्म्मन मेड क्लाक रक्खी हुई मधुर स्वर से खट खट शब्द कर रही है, दूसरी ओर एक मेज पर बड़ा आईना, तैल, इत्र वगैरः श्रृङ्गार का समान रक्खा हुआ है, तीसरी तरफ एक बहुत बढ़िया मसःरीदार निवाड़ से बुना हुआ पलँग पड़ा हुआ है जिसपर बहुमूल्य धानी रङ्ग की मखमल का बिस्तरा बिछा हुआ है। इस पलँग पर एक नव

युवक गौर वर्ण, मामूली कद, अलवर्ट फैशन के बाल तथा बाबुआना बढ़िया सुन्दर पोशाक से सुसज्जित विराजमान हैं। अवस्था लगभग २५ वर्ष के होगी, इन नव युवक बाबू का नाम बबू पद्मचन्द्र है। यह बाबू साहब इसी रायपुर नगर के रहनेवाले एक रईस आदमी हैं, बाबू पद्मचन्द्र की इस घर से बहुत कुछ अपनाहट है साहू बैजनाथ से इनकी बड़ी गाढ़ी मित्रता है, इनकी यहां सब से अधिक खातिरदारी होती है, यहां तक कि साहू साहब बिना बाबू साहब के पूछे कोई काम ही नहीं करते। इसी कमरे में एक कुरसी पर एक परम सुन्दरी नवयौवना युवती बैठी हुई है। ब्रह्माने ऐसी रूपवती को कैसे बनाया, संसार में ऐसी सुन्दरी बहुत कम हैं। जिसके सुन्दर सघन काले रङ्ग के घूंघरवाले केश जो नरमाई में कदापि रेशम से कम नहीं मालूम होते, जिसका अष्टमी के चन्द्रमा के समान ललाट, कामदेव के धनुष के समान भौहें, हिरन के नेत्र समान बड़े बड़े नेत्र, तोते की चोंच के समान नासिका, चन्द्रमा के समान मुख, सुन्दर २ गुलाबी रङ्ग का कोमल २ कपोल जिसके बीच में एक काले रङ्ग का तिल, कुन्दुरू के समान लाल ओंठ, मोती के समान कुन्दन जड़ित दन्त, कोकिल के समान स्वर, शङ्ख के समान कण्ठ, सेब के समान ठोढ़ी जिसमें श्याम रङ्ग का बिन्दु, सुराहीदार

गर्दन जिसमें पान की लाली की चमक, उमड़े हुए श्रीफल के समान कुच, सुन्दर २ पुष्पों की माला के समान भुजा, मनोहर उदर सहित पतली कमर, लावण्य जल की कूपिका के समान गम्भीर नाभि, कामी जन के मन को मोहित करनेवाले नितम्बन, केले के स्तम्भ के समान दोनों जङ्घा, तथा सुन्दर और सुडौल पिण्ड-लियां और सुवर्ण की समान शरीर के कान्ति है। जिसने अपनी कान्ति से चन्द्रमा, तेज से सूर्य्य और गम्भीरता से समुद्र को पराजय कर दिया है, और जो सर्वांग सुन्दर है। युवती की अवस्था १६ साल की है, शरीर सुडौल और पतले ढङ्ग का है चित्त को आकर्षण करनेवाली और हास्यमुख है अनेक प्रकार के सुनहरी आभूषणों से भूषित है, धानी रङ्ग की रेशमी फूलदार कुरती और गुलाबी रङ्ग की रेशमी साड़ी पहने हुए है। स्वभाव में सरल, गान विद्या में चतुर, विद्या में पण्डिता गृहकार्य्य में प्रवीणा और भी अनेक कार्य्यों में दक्ष है। सच तो यह है कि इसको बना कर ब्रह्मा कृतकृत्य हुए हैं, इससे पहले स्त्रियों की रचना से उनका चित्त नहीं भरा था। उसी का जन्म सफल है, उसी का मनुष्य जन्म पाना सार्थक है, तथा वही संसार में कृती है, उसी का पूर्ण भाग्योदय है, और उसी के प्रबल पुण्य का इस समय उदय है जिसकी यह मनोहरिणी प्राण-वल्लभा है।

पाठक! इस सर्व गुण सम्पन्न सुन्दरी का नाम चन्द्रकुमारी है और इसी युवती को पान लगाने का काम सपुर्द है। यही हमारे उपन्यास की नायिका है।

ग्यारह बजने का समय है इस कमरे में सिवाय बाबू पद्मचन्द्र और चन्द्रकुमारी के कोई नहीं है, युवती बैठी पान लगा रही है और बाबू पद्मचन्द्र पलँग पर बैठे हुए चन्द्रकुमारी की ओर टकटकी लगाये देख रहे हैं, जभी चन्द्रकुमारी ऊपर को गर्दन उठा कर देखती है तभी यह फौरन दृष्टि को फेर लेते हैं, ऐसा ही अनेक बार होने के पश्चात् चन्द्रकुमारी पान लेकर बाबू पद्म-चन्द्र के करकमलों में पान देने लगी। पान को हाथ में देते समय चन्द्रकुमारी ने पद्मचन्द्र के हाथ में अपनी अङ्गुली से कुछ इशारा किया और अपने नेत्रों से एक दो तीन बार प्रेम कटाक्ष किया। प्रेम कटाक्षों के होते ही पद्मचन्द्र के चित्त में प्रेम का बीज बो गया क्योंकि ऐसी सुन्दरी के नेत्र बाण ऐसे वैसे नहीं थे बलके एक अद्भुत भाव उत्पन्न करनेवाले थे जो लिखने में नहीं आ सकते। बाबू पद्मचन्द्र के चित्त की अजीब गति हो गई, मुंह से एक अक्षर भी न निकला, शरीर कांपने लगा, दिल धड़कने लगा किन्तु लज्जा वश कुछ न कह कर चित्त को वश में करके कलेजे को थाम कर थोड़ी देर के बाद अपने मकान की ओर रवाने हुए।

दूसरा परिच्छेद।

मकान पर आकर बाबू पद्मचन्द्र पलंग पर लेटे हुए उसी प्रेम वाण और उसी मनमोहनी के ध्यान में मग्न हैं, भूख प्यास का नाम नहीं, निद्रादेवी का काम नहीं कभी बाईं करवट बदलते हैं कभी दहिनी करवट बदलते हैं, कभी उठ कर बैठ जाते हैं, कभी फिर लेट जाते हैं, कभी कुछ सोचते हैं कभी कुछ सोचते हैं, चित्त में हजारों प्रकार की इच्छा उत्पन्न होती है परन्तु फिर निराश हो जाते हैं, सारांश यह है कि किसी प्रकार भी चैन नहीं है। अब इनसे शय्या पर भी नहीं रहा गया वह कोमल शय्या इन्हें कांटे सी चुभने लगी, सारे शरीर में ज्वाला की सी लपट लगने लगी, शरीर झुलसने लगा बिकल हो वह छत पर जा चढ़े वहां ठण्डी २ हवा के लगने से चित्त कुछ ठिकाने आया और बैठकर सोचने लगे—सोचें भी क्या सिवाय चन्द्रकुमारी के और इन्हें सोचना ही क्या था; ज्यों २ यह सोचने लगे त्यों २ चन्द्रकुमारी का वह गोरा २ सुन्दर शरीर, वह लाज भरी मुसकान, वह चितवन वह स्नेहयुक्त मधुरता भरी कोमल बातियां और भी याद आने लगीं; वह कहने लगेः—

दिल यह कहता है तनहा अगर वो मिलजाय।
न छोड़ना कभी जी भरके प्यार कर लेना ॥

इतना कहते ही कहते इन्हें कुछ झपकी सी आ गई और वहीं सो गये ।

तीसरा परिच्छेद ।

इधर रात्रि भर चन्द्रकुमारी भी इसी चिन्ता में मग्न रही नींद का नाम नहीं खाने पीने का काम नहीं कभी प्रेम का उदय होता है कभी लज्जा से प्रेम को दूर भगा देती, कभी बाबू साहब की मीठी २ बातें याद आकर फिर प्रेम के बशीभूत हो जाती है, कभी सोचती है कि प्रेम का परिणाम बुरा होता है किसी से प्रेम करना ठीक नहीं, इस प्रकार बहुत समय तक प्रेम और लज्जा के बीच संग्राम होता रहा, परन्तु चन्द्रकुमारी का स्वभाव ही प्रेम करने का है वह किसी को अप्रसन्न करना जानती ही नहीं सब को देखकर प्रसन्न होना और खातिर करना मुख्य कर्त्तव्य समझ रक्खा है। ऐसे गुण युक्त मनुष्य में प्रेम का प्रबल होना बहुत ही सहज है फिर बाबू पद्मचन्द्र पर तो यह तन मन से आसक्त थी इस कारण प्रेम की ही विजय हुई, परन्तु फिर भी मुख से कुछ कहने का साहस न समझ कर चन्द्रकुमारी ने बक्स में से एक लेटर पेपर, हैंण्डिल और दावात निकाल कर बाबू पद्मचन्द्र को पत्र लिखने का विचार किया किन्तु मन में कितनी ही शङ्का और लज्जा के

कारण फिर संकोच का उदय हुआ और विचारने लगी कि मैं अशिक्षिता हूं लिखना कुछ नहीं जानती फिर भला किस साहस से पत्र लिखूं, कलम उठाती है और फिर कुछ सोच कर रख देती है। चन्द्रकुमारी की इस समय अजीब हालत है "भई गति सांप छछून्दर केरी" क्या पद्मचन्द्र ने कोई जादूभरी पुड़िया छोड़ दी या कोई वशीरण मन्त्र फूंक दिया जो चन्द्रकुमारी की यह गति हो रही है। खैर थोड़े समय के पश्चात् चन्द्रकुमारी ने चित्त में यही स्थिर किया कि बिना बाबू साहब के तो कल नहीं पड़ती इसलिये पत्र तो अवश्य ही लिखना चाहिये। चन्द्रकुमारी ने फिर कागज, कलम, दावात सम्हाली और पत्र लिखना आरम्भ किया, पत्र लिख चुकने पर बक्स में से एक बहुत बढ़िया लिफाफा निकाला और उसमें चिट्ठी को रखकर बन्द करके बक्स में रख दिया।

चौथा परिच्छेद।

हमारे पाठकों को यह अवश्य सन्देह होगा कि यह चन्द्रकुमारी कौन है और साहू बैजनाथ से इसका क्या सम्बन्ध है, जिस ढङ्ग से हमने साहू साहब के यहां उसको उस उत्सव की रात्रि को देखा है उससे जान पड़ता है कि कदाचित् यह उनकी अर्द्धाङ्गी हो परन्तु

उसकी चालचलन और रङ्ग ढङ्ग हमारे ख्याल को गलत करती है, क्योंकि यह ढंग गृहस्थी स्त्रियों के नहीं होते आप देख चुके हैं कि एक ही बार के मिलने में उसने बाबू पद्मचन्द्र को अपने प्रेमजाल में फँसा लिया है और बाबू साहब, को पान देते समय छेड़छाड़ भी उसी की ओर से हुई है, इसलिये हमको सन्देह है कि यह कोई वेश्या तो नहीं है जो साहू साहब ने अपने चित्त लगाने के लिये रख ली है किन्तु यह ख्याल भी हमारा रद् हो जाता है क्योंकि हमने उसको साहू साहब के मकान में स्वतन्त्रता पूर्वक रहते हुए देखा है और उस रात्रि को भी जब सब बिरादरी की स्त्रियां वहां जमा थीं तो चन्द्रकुमारी का घर की मालिकनी के समान मकान में स्वतन्त्रता से उपस्थित रहना न चाहिये था। गरज जहां तक हमारा ख्याल है यह कोई निराले ढङ्ग की स्त्री अवश्य है। पाठक यहां उचित है कि आपको इसका कुछ हाल प्रकट कर दूँ।

चन्द्रकुमारी हिमालय पर्वत के किसी पर्वती ग्राम में क्षत्रिय वंश में उत्पन्न हुई थी इसके माता पिता का देहान्त हो चुका था इसी कारण से वह अपने किसी सम्बन्धी के यहां आशापुर में ही रहने लगी थी चन्द्र-कुमारी को बालकपन से ही खेल तमाशे आदि देखने का बड़ा शौक़ था। संयोग वश बाबू पद्मचन्द्र के यहां

भी कभी उत्सव था, उत्सव की धूम तमाम नगर में फैल रही थी हजारों स्त्रीं पुरुष इकट्ठे हो रहे थे। उत्सव में चन्द्रकुमारी और उसके माता पिता को भी बुलाया गया था। चन्द्रकुमारी की इच्छा भी उत्सव देखने की हुई। ठीक समय पर अपनी माता के साथ आकर वहां उपस्थित हुई।

संयोग वश उस उत्सव में साहू बैजनाथ जी को भी जाने का अवसर मिला।

जितनी स्त्रियां वहां उपस्थित थीं सब से अधिक सुन्दरी हमारी उपन्यासनायिका चन्द्रकुमारी ही थी जिसके मुखकी ज्योति को देखकर चन्द्रमा तनक्षीन, मुखमलीन हो आकाश में जा छिपा और लज्जा के मारे छिप २ कर पृथ्वी की ओर झांकता है और थोड़ा२ मुख नित्य प्रति निकालता है। जिसके नेत्रों की चञ्चलता को देख मीन और खञ्जन बन में जा छिपे। जिसकी नासिका की कोमलता निहार तिल के सुमन बन में लज्जित हो कुंभलाने लगे। जिसके कानों की शोभा देख गुलाब कांटों में जा मिला। जिसके दांतों की पंक्ति देख दाड़िम का हृदय दड़क गया। जिसके होठों की ललाई देख विद्रुम और बिम्बा फल हाथ मलते रहे। जिसकी भुजा को निहार कमल नाल ताल से बाहर नहीं निकला। जिसके कुचों की कठोरता देख

सुपारी कठोर हो गई। जिसके उदर की नम्रता देख गुलाब कांटों की बाड़ पर बैठ कर तप करने लगा। जिसकी कटि की कृशता देखकर केहरि किसी के सम्मुख नहीं पड़ता। जिसके उदर की त्रिबली देख गङ्गा, यमुना और सरस्वती एकत्र होकर सम्मति कर लज्जा की मारी समुद्र को तोड़ न जानिये कहां चली गईं। जिसकी जङ्घाओं की गोलाई देख कदली कपूर को भक्षण करने लगी। जिसके पदों को देखकर पद्म का दम घुटने लगा। सारांश उसके सर्वांग को देखकर साहू साहब मोहित हो गये।

इस सुन्दरी को देखते ही साहू साहब का चित्त हाथ से निकल गया और इस युवती के ऊपर अनेक प्रकार के हाव भाव कटाक्ष करने लगे। साहू बैजनाथ भी प्रेमी स्वभाव आदमी हैं इनकी आई हुई तबीयत कभी खाली नहीं जाती। इनके प्रेमबाणों ने चन्द्रकुमारी के चित्त को चञ्चल कर दिया, चन्द्रकुमारी इनके रूप को देखकर मोहित हो गई परन्तु लज्जा वश एक दूसरे से कुछ न कह सके। रात भर दोनों इसी प्रकार अपने २ दिल हाथों में लिये बैठे रहे। समय पूरा होने पर दोनों अपने २ घर गये और मन की बात मन में ही रही।

मकान पर आकर साहू बैजनाथ और चन्द्रकुमारी

की प्रेम के वश होकर अजीब हालत होने लगी। साहू साहब चन्द्रकुमारी का पता लगाने के लिये दिन रात घूमने लगे, हजारों तरह की परेशानी उठाने लगे, खाने पीने की सुध न रही, नींद का नाम न रहा, प्रेमान्ध होकर मतवालों की तरह नगर के तमाम गली कूचों में खाक छानने लगे और कहने लगे कि "कहां जाऊं किधर ढूंढूं न सोते कल न बैठे कल;" इसी प्रकार बहुत दिनों तक यही हालत रही। परन्तु तुलसीदास जी ने सच कहा है कि "जाकर जापर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलै न कछु सन्देहू॥" सच्चे प्रेमी को अवश्य फल की प्राप्ति होती है ऐसा सब को निश्चय रखना चाहिये।

अकस्मात् एक दिन घूमते २ एक कोठी की अटारी के ऊपर वही चन्द्रकुमारी खड़ी दीख पड़ी, साहू साहब इसको देखकर सन्देह में पड़ गये और वहीं रुक गये और सोचने लगे कि हे ईश्वर क्या आज मेरा परिश्रम सफल होगा, क्या आज मेरा भाग्योदय होगा, क्या यह वही प्रफुल्ल पद्मिनी है, क्या यह वही सुधारस लजावन हारा मुख है, क्या यह वही कंज खंज मीन विनिन्दित नेत्र हैं, क्या यह वही अनुपम रूप लावण्य है, क्या यह वही मेरी प्राण प्यारी है, जिसकी खोज में मेरी यह गति हो रही है अथवा मैं धोखा खा रहा हूं। साहू साहब इसी प्रकार सोचते हुए टकटकी लगाये देखते रहे।

इधर चन्द्रकुमारी को भी जिस दिन से बाबू पद्म-चन्द्र के यहां नज़रों में फँस गई थी चैन नहीं था वह रात दिन इसी चिन्ता में रहती थी कि किसी प्रकार साहू साहब के दर्शन हो जांय, इसी लिये वह बारम्बार कभी कोठी के नीचे और कभी ऊपर सैकड़ों चक्कर लगाती रहती थी और अपने चित्त में कहती रहती थी कि क्या उनको मेरा ख्याल न होगा नहीं २ अवश्य होगा और वह मेरी तलाश में भी अवश्य घूमते होंगे इसी विचार में अकसर वह अटारी पर खड़ी रहा करती थी।

सन्ध्या का समय था कुछ २ झुक मुका हो आया था साहू साहब को एकदम अपनी कोठी के नीचे खड़ा देखकर चन्द्रकुमारी सन्देह में पड़ गई और बहुत गौर से देखने लगी। जब दोनों को देखते २ बहुत समय बीत गया तब साहू साहब एक दम मूर्च्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े, साहू साहब के गिरते ही चन्द्रकुमारी घबरा गई और तुरन्त चित्त में निश्चय कर लिया कि यह अवश्य वही मेरा प्राणप्यारा है। तत्काल नीचे उतर आई और साहू साहब को उठा कर अपनी कोठी में ले जाकर पलँग पर लिटा दिया और आप पंखा झलने लगी। चन्द्रकुमारी ने, खस, केवड़ा और चन्दन इत्यादि के द्वारा उपचार करके साहू साहब को चैतन्य

किया। होश में आते ही साहू साहब ने चन्द्रकुमारी को बैठे हुए पंखा करते पाया, देखते ही कहने लगे अहो भाग्य, धन्य परमात्मा तेरी ही कृपा से आज मेरा सम्पूर्ण दुःख दूर हुआ दीखता है । आज मेरी खोई हुई सम्पत्ति मेरे हाथ लगी ।

साहू साहब—(चन्द्रकुमारी से) प्यारी ! अब जुदाई सहने की ताकत नहीं बेहतर यही है कि या तो जन्म भर साथ दो वरना (जेब से विष निकाल कर) प्राण त्याग कर दूंगा ।

चन्द्रकुमारी—(घबरा कर) प्यारे ! मुझसे खुद भी आपकी जुदाई सहन नहीं होती, मुझको आपसे कुछ इंकार नहीं मैं सदैव आपकी सेवा करने को उपस्थित हूं, आप अपने चित्त में विश्वास रखिये ।

बस साहू साहब के मनोरथ सफल हुए दोनों में अगाध प्रेम बढ़ने लगा और साहू साहब दुलहिन बना कर चन्द्रकुमारी को अपने घर ले आये। बलके एक प्रकार से यों कहिये कि बाल पद्मचन्द्र के उत्सव की निशानी तमाम अवस्था के लिये साहू बैजनाथ के हाथ लगी। और साहू साहब आनन्द पूर्वक चन्द्रकुमारी के साथ जीवन व्यतीत करने लगे ।

पांचवां परिच्छेद ।

होनहार बड़ा प्रबल है, जो होनेवाला होता है उसके वैसे ही कारण हो जाते हैं । ईश्वर की दया से चन्द्रकुमारी के पास सब कुछ था परन्तु फिर भी चन्द्र-कुमारी को बाबू पद्मचन्द्र से एक ऐसा लाभ होने का साभान होने लगा कि वह चन्द्रकुमारी की अवस्था भर अमर रहैगा ।

प्रिय पाठको ! बाबू पद्मचन्द्र को उर्दू की अच्छी योग्यता थी वह जब कोई कविता पढ़ते थे तो उनके सुरीले कण्ठ से अत्यन्त सुन्दर मालूम होती थी उनको पढ़ते हुए देखकर चन्द्रकुमारी को भी उर्दू पढ़ने का उत्साह उत्पन्न हुआ । दूसरे आने जाने का कारण जान कर भी विचारा कि एक पन्थ दो काज मेरा शौक पूरा होगा और मिलने बैठने में भी कोई बाधा न होगी । क्योंकि चन्द्रकुमारी को तो बाबू पद्मचन्द्र की अत्यन्त इच्छा लगी हुई थी इसी कारण उसने यह बहाना निकाला । बस यही विचार कर एक दिन चन्द्रकुमारी ने साहू बैजनाथ जी से प्रार्थना की कि बाबू पद्मचन्द्रको उर्दू भाषा में अच्छी योग्यता है और वह आपके मित्र हैं मैं उनसे पढ़ना चाहती हूं । कृपा करके बाबू साहब से कह दीजिये कि वह कुछ समय मेरे लिये भी दिया करें तो बड़ी कृपा होगी, मैं बाबू साहब का गुण तमाम उमर न भूलूंगी । साहू

सासब को चन्द्रकुमारी की खातिर स्वीकार ही थी साहू साहब ने कहा कोई हानि नहीं मैं बाबू साहब से अवश्य कह दूंगा वह तो अपने घर के ही आदमी हैं। गरज साहू साहब ने एक दिन बाबू पद्मचन्द्र से भी कह दिया कि बाबू साहब हमारी स्त्री की इच्छा उर्दू सीखने की है सो कृपा करके थोड़ी देर उसको कुछ बतला दिया कीजिये। बस बाबू पद्मचन्द्र को भी और क्या चाहिये था वह तो स्वयं ही हजारों अटकलें चन्द्रकुमारी से मिलने की सोचा करते थे सो आज अचानक ही साहू साहब के मुखसे यह बात सुनकर अपने चित्त में प्रसन्न हो गये और साधारण स्वभाव से कहने लगे कि जैसी आपकी इच्छा मुझे क्या इंकार है। इस प्रकार बात चीत के पश्चात् बाबू पद्मचन्द्र अपने मकान को चले आये परन्तु मकान पर आकर भी रात्रि भर यही चिन्ता रही कि चन्द्रकुमारी से अपनी हालत कैसे कहूंगा और वह मुझसे कैसे प्रसन्न होगी।

—<0>—

छठा परिच्छेद।

यामिनी का शेष याम बीता चाहता है, प्रभात समीर मन्द मन्द प्रवाहित होने लगा है। नलिनी सुन्दरी पतिबिरह में सारी रात बिता अब पतिमिलनकी आशा से मधुर मन्द मुस्कान की छटा दिखाने लगी है, कानन

सुहागिनी लतावधू के साथ धूर्त पवन की चालाकियां देख रही है। सारी रात बिता अब पतिवियोग का समय जान प्रफुल्ल कुमुदिनी इक टक से अपने प्राणवल्लभ शशाङ्क को निहार रही है, नवीन मालती प्यारे मधुकर की मिलन लालसा से उत्कण्ठित हो बाट देख रही है, ऊषा सखी के आगमन और मिलन की प्रसन्नता से चिड़ियां मटक २ कर गा रही हैं, धीरे २ सूर्य्य देव अपनी सुनहरी किरणों से सम्पूर्ण संसार को जगमगा रहे हैं, पक्षीगण अपने २ घोंसलों से निकल कर आकाश की ताजी २ हवा में विचरण कर रहे हैं, प्रभाती रागों का स्थान २ पर गाना हो रहा हैं।

जेहि पर जाकर सत्य सनेहू।
सो त्यहि मिलैं न कछु सन्देहू॥

सच्चे प्रेमियों की अभिलाषा अवश्य पूर्ण होती है, यह बिलकुल ही सत्य है। आज हमारे उपन्यासनायक बाबू पद्मचन्द्र के भाग्य का उदय है, जिसकी आशा कदापि नहीं की जाती थी वह समय थोड़ी देर में आया चाहता है। सूर्य्य की सुनहरी किरणें बाबू पद्मचन्द्र के मुख पर पड़ते ही बाबू साहब एकाएक आंखें मलते हुए चटपट उठ बैठे, उठते ही चन्द्रकुमारी की ओर ध्यान गया, बारम्बार विचारने लगे कि चन्द्रकुमारी की वह छटा, वह छबि, वह चितवन कब देखूंगा, वह

समय कब आयेगा, वह प्यारी मुझे गले से कब लगा-वेगी, यहां तो अब पल छिन काटना कठिन हो रहा है, ऐसी अनेक बातें सोचते २ एक ओर गहरी आवाज से गाने लगे।

उठेगा देखिये किस दिन यह पर्दा बेहिजाबी का।
अभी नामे खुदा वो हमसे शरमाते हैं डरते हैं॥

क्या करूं, कहां जाऊं अभी साहू साहब ने पढ़ाने के लिये भी कोई दिन नियत नहीं किया फिर क्या बहाना बनाऊं, उसको अपने दिल की हालत कैसे दिखाऊं कभी ध्यान होता है दिल को क्यों फँसाऊं, नाहक सदमे क्यों उठाऊं, बैठे बिठाये आफत क्यों लगाऊं, इस प्रेम पन्थ में कदम क्यों रक्खूं यह तो बड़ा कठिन मार्ग है। परन्तु उस मोहिनी मूर्ति का प्रेम अधिक समय तक स्थिर रूप से कब इस ख्याल को ठहरने दे सकता था। बाबू साहब को तो सिवाय उस चन्द्रवदनी के देखने के और कोई ख्याल स्थिर रूप से रहता ही नहीं था, सोचते सब कुछ हैं परन्तु फिर वही चन्द्रकुमारी से मिलने की इच्छा, वही उस रात्रि के प्रेम कटाक्ष का ध्यान हो जाता था। बल्के यों समझिये कि इनको सिवाय चन्द्रकुमारी के देखने के और न तो कोई इच्छा है और न कुछ काम है।

जब चित्त में विशेष व्याकुलता उत्पन्न होने लगी तब

बाबू पद्मचन्द्र ने स्थिर रूप से फिर यही विचारा कि आज तो पढ़ाने के बहाने स्वयं ही चलना चाहिये क्योंकि साहू साहब ने कह तो दिया ही है पीछे जैसा कुछ होगा देखा जायगा।

बस यही विचार कर नित्य की क्रिया से निवृत हो चन्द्रकुमारी के महल को रवाने हुए। और साहू साहब को जाकर आवाज दी, इत्तफाक से वह मकान पर मौजूद नहीं थे। प्रथम वही मृगनयनी, चञ्चल बदनी चन्द्रकुमारी नेत्रों के सन्मुख दीख पड़ी। बाबू पद्मचन्द्र ने उसको देखकर प्रेम भरी दृष्टि से एक दम कुछ देर तक देखते २ मुस्कुरा कर गर्दन नीची कर ली और चन्द्रकुमारी ने भी हंस कर मुख नीचा कर लिया। और फिर वह कहने लगी—

चन्द्र०—(बाबू साहब से) अहा आइये सरकार।

पद्म०—क्या अब भी आने में कुछ सन्देह है।

बाबू पद्मचन्द्र उसी रात्रिवाले खास कमरे में जाकर पलँग पर बैठ गये।

चन्द्र०—कहिये आपका चित्त कैसा है!

पद्म०—आपकी बला से।

चन्द्र०—मुख पर मलिनता क्यों है।

पद्म०—आपही जानें।

चन्द्र०—(हाथ जोड़ कर) दासी से ऐसा क्या अपराध हुआ।

पद्म०—आपका अपराध तो कुछ भी नहीं ?

चन्द्र०—फिर क्या कारण ?

पद्म०— ॥ दोहा ॥

कहन सुनन को है नहीं, पढ़ी लिखी नहीं जात ।
अपने जियसे जानिये, मेरे जियकी बात ॥

—कहिये क्या समझीं ?

चन्द्र०—(दिल में जानते हुए भी दिल्लगी से) बहुत समझी मगर फिर भी कम समझी ।

पद्म०—समझते समझते समझ जाओगी ।

चन्द्र०—(पान लगा कर) लीजिये खाइये ।

पद्म०—बस रहने दीजिये ।

चन्द्र०—क्यों ? क्या कोई नई बात है ।

पद्म०—नई बात तो आपही जानें ।

चन्द्र०—फिर पान खाने में क्या इंकार है, क्या कुछ अप्रसन्नता है ?

पद्म०—अप्रसन्न तो कदाचित आप ही कुछ हों, भला मैं अप्रसन्न कैसे हो सकता हूं ।

चन्द्र०—मैं तो आपकी ताबेदार हूं । लीजिये पान तो खाइये ।

पद्म०—उस दिन के पान की तो गर्मी अभी तक कम न हुई और न कम होने की आशा ही दीख पड़ती है फिर भला और खाकर क्या गति होगी ।

चन्द्र०—(हंस कर) लीजिये पान तो खाइये, गर्मी का तो रहना ही अच्छा है।

पद्म०—मुझे आपके कहने से इंकार भी क्या है। मगर .... कहकर चुप हो जाते हैं।

चन्द्र०—मगर क्या?

पद्म०—मगर उस दिन के पान का भी ध्यान रखना।

चन्द्रकुमारी ने इसके उत्तर में वही उस रात का लिखा हुआ पत्र बक्स में से बाबू पद्मचन्द्र के हाथ में दिया और कहा लीजिये इसको पढ़िये। बाबू पद्मचन्द्र ने चन्द्रकुमारी का पत्र लेकर मस्तक से लगाया और खोल कर पढ़ा ही चाहते थे कि सारा शरीर कांपने लगा, हृदय में अत्यन्त चञ्चलता उत्पन्न हो गई, नेत्रों से देखने की शक्ति कुछ समय के लिये लोप सी हो गई। कुछ समय के पश्चात् चित्त कुछ ठिकाने आया और नीचे लिखा पत्र पढ़ने लगे। पाठको! चन्द्रकुमारी अभी तक उर्दू नहीं जानती थी परन्तु फिर भी उसको बहुत सी शेर, गजलें याद थीं।

चन्द्रकुमारी का प्रथम पत्र।

मुशफ़िक़ लिखूं रफ़ीक़ लिखूं दिलरुबा लिखूं।
हैरान हूं कि आपको अलक़ाब क्या लिखूं॥

प्यारे महरबान!

मैं आपकी ताबेदार हूं, मुझे आप अपनी दासी

समझिये, दासी हर समय आपकी सेवा करने को उपस्थित है, परन्तु प्रेम का पन्थ महा कठिन है, इसमें बड़ी २ आपत्तियां उठानी पड़ती हैं, प्रमाण के लिये हजारों पुस्तकें मौजूद हैं, अधिक क्या निवेदन करूं, आप स्वयं बुद्धिमान् हैं, इस कारण उचित यही है कि आप विचार के साथ काम करें। विशेष कृपादृष्टि रक्खें।

आपकी आज्ञाकारिणी,

चन्द्रकुमारी।

इस पत्र को देखकर बाबू पद्मचन्द्र ने कितनी ही बार पढ़ा परन्तु कुछ भी तृप्ति न हुई क्योंकि चन्द्रकुमारी का प्रथम तो पत्र जिसमें मोती के समान अक्षर, मनोहर भाषा और विनय आदि होने के कारण अनेक बार पढ़ने की इच्छा उत्पन्न होने लगी। खैर पत्र पढ़ने के पश्चात् चित्त कुमति और सुमति के फेर में पड़ गया और विचारने लगे कि क्या करूं, कैसे करूं, चित्त तो मानता नहीं इस पत्र का उत्तर दूं अथवा न दूं और यदि दूं भी तो क्या कहूं अथवा क्या लिखूं कुछ समझ में नहीं आता। कभी सोचने लगे, "सकल पदारथ हैं जग मांहीं। भाग्य बिना नर पावत नाहीं॥" ठीक है यह भाग्यवान् और मैं भाग्यहीन फिर कैसा सम्बन्ध, कहां वह चन्द्रवदनी सर्वांगसुन्दरी युवती और कहां मैं कुरूप मनुष्य फिर कैसा प्रीति का ढङ्ग इत्यादि, ऐसी ही

मन में अनेक शङ्कायें उत्पन्न होने लगीं परन्तु चन्द्र-कुमारी से पत्र के उत्तर में कुछ न कहकर केवल प्रति दिन सन्ध्या के समय पढ़ाने का समय नियत करके चुप चाप मकान को चले आये।

मकान पर आकर भी बाबू पद्मचन्द्र को चैन नहीं पड़ा क्योंकि यह प्रेम स्वभाव के तो मनुष्य थे जिसपर उस चञ्चलनयनी चन्द्रकुमारी के प्रेमकटाक्ष का घाव इनको और भी बेचैन कर रहा था। बाबू पद्मचन्द्र ने जब से चन्द्र कुमारी का पत्र देखा है तब से वह संशय में पड़े हुए हैं। मन में सोचते हैं कि पत्र का उत्तर देना व्यर्थ है परन्तु फिर दो चार अक्षर लिख कर फाड़ कर फेंक देते हैं, कोई बिचार ठीक नहीं ठहरता। कभी लज्जा का भय करते हैं, कभी उस मनमोहनी के नेत्र बाणों का ध्यान करते हैं। अजब चक्कर में फँसे हैं। परतु प्रेमपन्थ फिर भी बलवान् है इसकी छाया मनुष्य को कुछ का कुछ बना देती है जिसके चित्त में यह प्रेम अंकुर फूटा वह प्रेम का ही हो गया उसको सिवाय अपनी प्यारी के संसार में और कुछ भी नहीं सूझता। इसी प्रकार हमारे बाबू पद्मचन्द्र की हालत है। यह प्रेम के वशीभूत हो रहे हैं, इन्हें बिना चन्द्रकुमारी के जीवन भार मालूम होता है। बहुत सोच विचार के पश्चात् बाबू पद्मचन्द्र ने यही स्थिर किया कि पत्र तो लिखूं इसमें क्या हानि

है आगे अपना प्रारब्ध । यही विचार कर फिर पत्र लिखना आरम्भ किया ।

श्रीमती मेरी प्यारी !

खुश रहो। ईश्वर तुम्हारी सुन्दरता को दिन दूना करे। प्यारी! तुम्हार समझाना तो सही है परन्तु मैं तुम्हारे नेत्रबाणों से बेधा जा चुका हूं और तुम्हारा ही हो चुक हूं, चित्त को बहुतेरा समझा जाता हूं परन्तु नहीं मानता, सोते जागते हर समय तुम्हारा ही ध्यान रहता है, ध्यान क्या बलके इस समय संसार में मुझे तुम ही तुम दीखती हे। विना तुम्हारी कृपा के अब संसार में जीवन भार है। आशा है कि कुछ मेरी ओर तरस खाकर कृपा दृष्टि रक्खोगी। तुम्हारा प्रेमभिक्षुक,

पद्मचन्द्र ।

बाबू पद्मचन्द्र ने इस पत्र को लिखकर एक लिफाफे के भीतर बन्द किया और अपनी पाकेट में रख लिया दूसरे दिन पढ़ाने के नियमित समय पर जाकर चन्द्र-कुमारी के हाथ में दे दिया। चन्द्रकुमारी ने इस पत्र को पढ़ कर कुछ उत्तर नहीं दिया।

सातवां परिच्छेद ।

चन्द्रकुमारी और बाबू पद्मचन्द्र का प्रेमारम्भ ।

दो चार दिन यों ही बीत गये चन्द्रकुमारी ने पत्र

सम्बन्धी विषय में कुछ उत्तर नहीं दिया परन्तु प्रेम बीज तो दोनों ही के चित्त में बढ़ गया था फिर क्या कारण जो उसका अंकुर न फूटे, धीरे २ दोनों के चित्त में प्रेम बढ़ने लगा, कभी कभी एकान्त मिलने बैठने का अवसर भी मिलने लगा चन्द्रकुमारी बाबू पद्मचन्द्र को प्रेम और बिरह की भरी शेर, ग़ज़लें और दोहे चौपाई आदि सुनाने लगी, अनेक प्रकार के उपन्यास और प्रेमकथायुक्त पुस्तकों के देखने की इच्छा प्रगट करने लगी बात बात में छेड़छाड़ और हंसी दिल्लगी करने लगी। अब चन्द्रकुमारी पद्मचन्द्र की और पद्मचन्द्र चन्द्रकुमारी के हो गये। परन्तु बाबू पद्मचन्द्र को चन्द्रकुमारी से बहुत देर तक ऐसी स्वतन्त्रता से मिलने बैठने का मौका नहीं मिलता था कि जिससे वह दो चार घड़ी दिल खोलकर बातें कर लें यदि कोई समय ऐसा हुआ भी कि साहू बैजनाथ किसी काम के लिये चले गये तो दिल खोल कर दो चार बातें कर लीं नहीं तो इन दोनों की बातें इशारों और चिट्ठियों के द्वारा ही हुआ करती थीं।

इसी बीच में साहू बैजनाथ जी कुछ दिनों के लिये बाहर चले गये जिससे कि चन्द्रकुमारी कुछ दिनों के लिये स्वतन्त्र हो गई और प्रेम वृक्ष जड़ पकड़ गया। अब चन्द्रकुमारी का प्रेम दुतिया के चन्द्रमा के समान

दिन २ बढ़ने लगा, चन्द्रकुमारी को बिना पद्मचन्द्र के देखे एक २ पल काटना कठिन होने लगा, खाने पीने की सुध न रही, आखों में नींन्द न रही हर समय बाबू पद्मचन्द्र का ही ध्यान रहने लगा, हर मनुष्य से बाबू साहब का ही जिक्र और प्रशंसा करना पसन्द करने लगी, स्वतन्त्रता न होने के कारण चन्द्रकुमारी बाबू साहब की प्रीति को बहुतेरा छिपाती और औरों पर कोई बात प्रकट न होने देती थी। अपने ध्यान को भी बहुतेरा भुलाती थी परन्तु बाबू साहब की मुहब्बत दिल से न भूलती थी। मालूम होता है कि बाबू साहब ने अवश्य कोई वशीकरण मन्त्र सिद्ध करके चन्द्रकुमारी को वश में कर लिया है।

नहीं नहीं पाठको चन्द्रकुमारी को मन्त्र द्वारा वशीभूत नहीं किया है बल्कि चन्द्रकुमारी स्वयं ही बाबू साहब को अपना सर्वस्व समझने लगी है। क्योंकि चन्द्रकुमारी में प्रेम करने का अद्भुत गुण है, चन्द्र-कुमारी की प्रीति प्रीतियों का नमूना है।

जो समय पद्मचन्द्र के आने का नियमित था उसमें यदि किसी कारण से आने में कुछ देरी हो जाती अथवा नहीं आते तो चन्द्रकुमारी मछली की तरह तड़फने लगती, घबराती और व्याकुल होकर बारम्बार दर-वाजे पर आती चारों ओर देखती और बाबू साहब को

आता हुआ न जान कर अपने कमरे में बैठी बैठी रोने लगती। कहिये पाठको चन्द्रकुमारी की कुछ हालत देखी सच तो यह है कि सच्ची प्रीति में भी कुछ अजीब शक्ति है उसी का यह प्रभाव है।

इधर बाबू पद्मचन्द्र की भी हालत चन्द्रकुमारी से कुछ कम नहीं है, सोते जागते हर समय चन्द्रकुमारी का ध्यान रहता है, आकाश में पताल में और सब स्थानों में चन्द्रकुमारी ही चन्द्रकुमारी दीखती है अर्थात् चन्द्र-कुमारी की मुहब्बत में मतवाले बन रहे हैं, इनका किसी काम में चित्त नहीं लगता, खाने पीने का ध्यान नहीं रहता पहरने की सुध नहीं रहती और हर समय यह भी चन्द्रकुमारी का जिक्र और प्रशंशा करना पसन्द करते, तरह तरह के बहानों से चन्द्रकुमारी से जाकर मिलते, बिना चन्द्रकुमारी के मिले चैन नहीं पड़ता अधिक क्या कहें जो हालत इनकी चन्द्रकुमारी की मुहब्बत में होने लगी वह लिखने में नहीं आ सकती। यह सब प्रकार से अपना जीवनसर्वस्व चन्द्रकुमारी को ही समझने लगे।

प्रिय पाठको! प्रीति की लीला अपार है, इस प्रीति ने हजारों प्रेमियों को मतवाला बना कर बन बन फिराया बड़े २ पहाड़ों और घोर जङ्गलों में टक्करें लग-वाईं यहां तक कि सैकड़ों ने जानें गवाईं मगर जहां

तक हुआ प्रीति निबाही । यही हालत हमारे उपन्यास नायक बाबू पद्मचन्द्र की होने लगी ।

अगर बाबू पद्मचन्द्र कहीं बाहर जाते हैं तो उसी दिन वापिस आ जाते हैं, अगर रेलगाड़ी धोखा भी दे जाती है तो यह आंधी मेह और परेशानी की कुछ भी परवाह न करके रातों रात कोसों की मञ्जिल ते करके अपनी प्यारी चन्द्रकुमारी के दर्शन करते हैं, क्योंकि चन्द्रकुमारी की मुहब्बत इन्हें कहीं भी चैन नहीं लेने देती, मुहब्बत के सामने इनको कुछ भी दिक्कत नहीं मालूम होती । चन्द्रकुमारी के जरा देर न मिलने से इनको एक अजीब किस्मके दौरे पड़ने लगते हैं, दर्द दिल उठने लगता है, कलेजा पकड़ २ कर रोने लगते हैं, आंखों के आगे अंधेरी आ जाती है और घबरा २ कर रात के दो दो तीन २ बजे घोर अंधयारी में चन्द्रकुमारी से मिलते हैं ।

इधर चन्द्रकुमारी को जो प्रीति होने से दुःख भोगना पड़ा है उसकी भी सीमा नहीं है, वह परतन्त्रता आदि अनेक कारणों से दुःख होने के कारण अपने प्यारे बाबू पद्मचन्द्र से बात तक करने को तरसती है, बिना इनके व्याकुल और बदहवासों की तरह मतवाली रहती है । अनेक प्रकार की चतुराई से जैसे भी होता है बाबू साहब से मिलना ही गनीमत समझती है, अनेक पत्रों

के द्वारा अपनी हालत बाबू साहब से जाहिर करती है। इन तकलीफों के कारण इसको घर में रहना भी कठिन मालूम होता है। किन्तु लोकलज्जा के कारण अपना खून आप ही पीकर बस समझ कर रहती है और बारम्बार बाबू साहब से यही कहा करती है कि प्यारे मुझसे इस परतन्त्रता में नहीं रहा जाता यह मुहब्बत परवशी के लायक नहीं है इससे तो बेहतर यही है कि ईश्वर मौत दें।

प्रिय पाठको! अब आप जान सकते हैं कि जब इन दोनों में इतनी दिली मुहब्बत है तो एक दूसरे के बिना कितनी तकलीफ मानता होगा इसका अन्दाजा आप ही के ऊपर छोड़ते हैं।

आठवां परिच्छेद।

(प्रेम रस।)

सच है प्रेम से बढ़कर मनुष्य के लिये इस लोक में और परलोक में कोई भी वस्तु अधिक मीठी और सुन्दर नहीं है, परमात्मा ने प्रेम का बीज मनुष्य के हृदय में ही बोया है प्रेम ही मनुष्य को नीचे गिरा देता है और प्रेम ही मनुष्य को शिखर पर चढ़ा देता है, प्रेमी के सामने कोई रुकावट नहीं है जिसको वह तोड़ नहीं सकता, कोई कठिनता नहीं जिसको वह सहल नहीं कर

सकता, जिसके चित्त में प्रेम है, वह असंभव को संभव कर सकता, जिसके चित्त में प्रेम है वह असम्भव को सम्भव कर दिखाता है और वह उस स्थान पर पहुंच जाता है जहां प्रेम से शून्य हृदय पहुंच ही नहीं सकता । प्रेम ही निर्बल को बलवानों से लड़ाता है और अभिमानियों को नीचा दिखाता है, प्रेमी सदैव जागृत अवस्था में रहता है अगर सोता है तो प्रेम के ध्यान में और जागता है तो प्रेम के ध्यान में उसको स्वप्न में भी प्रेम ही प्रेम दीखता है प्रेमी कठिन से कठिन घाटियों पर कदम रखता है और थक जाता है परन्तु प्रेम उसको आगे ही आगे लिये जाता है, तकलीफों के बोझ से दबा जाता है किन्तु तंग नहीं आता, हैरान होता है परन्तु परेशान खातिर नहीं होता है, मुशीबत उसके चेहरे को मुरझा नहीं देती बलके जलती हुई मशाल की तरह उसके चेहरे को प्रकाश करती है । प्रेम की जय है, प्रेम के सामने सब शीश झुकाते हैं । प्रेम से मतवाला दूर ही से अपने प्रीतम को देखता है और उसके रोम २ में प्रीतम ही प्रीतम बसा रहता है, हर समय उसके कानों में भी उसकी ही आवाज सुनाई देती है, प्रेमी प्रेम में इतना उन्मत्त हो जाता है कि जिधर को आंख उठाता है उधर ही प्रीतम की सूरत दिखाई देती है, प्रेमी को हर समय प्रेम की ही लहरें आती हैं और उन्हीं ल-

हरों में वह दिन रात गोते लगाता, प्रेम उसको हिरा-सां नहीं कर बलके दिलासा देता है और उसी हौसले में वह अपने आपको भी भूल जाता है, अगर मुंह से बोलता है तौभी उसी के गीत गाता है और अपने प्यारे के लिये अपनी जान जोखों में डाल कर भी कठिन से कठिन मार्गों को तै करता है तथा अपनी जान पर भी खेल जाता है, उसको अपने शरीर की कुछ भी सुध नहीं रहती, चोटों पर चोटें शरीर पर सहता है परन्तु उसको कुछ भी कष्ट नहीं मालूम होता है, संसार में जो कुछ भी उसके पास होता है वह अपने प्रीतम के ऊपर न्योछावर करने को तैय्यार हो जाता है यहां तक कि वह अपने को भी उससे पृथक् नहीं समझता । प्रेम में यह गुण है कि वह खुदगरजी को बाहर निकाल कर फेंक देता है, जहां खुदगरजी है वहां प्रेम नहीं और ज़हां प्रेम है वहां खुदगरजी नहीं रहती है ।

प्रिय पाठक ! तुम चाहो सो कहो सच तो यह है कि प्रेम का पन्थ ही निराला है, और किस पर किस गुण से होता है इस अगम समुद्र की थाह वही पा सकता है जो कभी उसमें डूबा है । इस मदिरा की मौज को जिसने झेला है उसी का हृदय कुछ कह सकता है, इस तलए की पैनी धार से जिसके अङ्ग क्षत विक्षत हुए हैं उसे ही इसके सुख दुःख का विशेष ज्ञान हो सकता है।

प्रेम का क्या स्वरूप है, कहां से किस ढङ्ग से प्रेम का विकाश होता है वह मानव बुद्धि के बाहर है, प्रेम क्या चाहता है क्या करता है, राजभवनवासी अतुल भोगविलासी, परम ऐश्वर्यशाली राजराजेश्वर के प्रेम को तुच्छ मान सामान्य हीन दीन जनों पर प्रेम हो जाता है। जिस चन्द्र के अमल धवल कर विकाश से कुमुदिनी प्रमुदित होती है, कमलिनी उसे निहारते ही मुंह ढांप लेती है। इसी से कहते हैं कि प्रेम के निदान निर्णय में अब तक कोई भी प्रेमतत्त्वविद् पण्डित समर्थ नहीं हुए हैं।

कवित्त।

यह प्रेम कथा कहिबे कि नहीं कहबोई करो कोउ मानत है। पुनि ऊपरी धीर धरायो चहै तन रोग नहीं पहचानत है॥ कवि ठाकुर जाहि लगी कसकै नहीं सो कसकै उर आनत है। बिन आपने पांय बिवाई फटे कोई पीर पराई का जानत है॥

तब भला अब इस विषय में अधिक क्या कहैं।

नवां परिच्छेद।

समय का उलट फेर।

किसी का इसे वक्त भाता नहीं।
यह दो दिल को एकजा बिठाता नहीं॥

अभी रात के नौ बजे होंगे बाबू पद्मचन्द्र और चन्द्रकुमारी अपने सोने के कमरे में हजार बनाओ सिंगार से सजे सजाये एक दूसरे के दिलों में चुटकियां ले रहे हैं। आज के रोज जो चन्द्रकुमारी की सजधज हम देख रहे हैं वह उस रोज से कहीं बढ़ चढ़ कर है जिस रोज हमने उसको पहली ही बार साहु बैजनाथ जी के यहां उस उत्सव की रात्रि को देखा था। इसका कारण यह है कि आज तीजों का त्यौहार है जो हिन्दुस्तान में स्त्रियों के त्यौहारों में शिरमौर माना जाता है। पाठकगण! चन्द्रकुमारी इस समय रेशमी कुरता और उसके ऊपर सब्ज़ फूलदार अंग्रेजी फैशन की रेशमी वास्कट पहने हुए है जिसपर सब्ज पारसी साड़ी और भी सितम ढा रही, कानों में दो सुनहरी बिजलियां जगमग करती हुई इस दामिनी के मुख पर वह यौवन बरसा रहीं हैं कि परमेश्वर का स्मरण आकर उसका धन्यवाद मुंह से निकल ही जाता है। पाठक! हम उसकी सुन्दरता के विषय में समस्त सविस्तर हाल पहले ही लिख चुके

हैं इसलिये उसका दुहराना ठीक न होगा इस कारण उसको छोड़ दिया जाता है और केवल यही लिखना उचित समझा जाता है कि आज इस चांदनी रात में यह पौशाक उसके कुन्दन जैसे बदन पर सोने पर सुहागे का काम दे रही है जिसको यदि कोई महात्मा भी देख ले तो उसके नाम की सुमरनी करने लगे। हम यह तमाशा देख ही रहे थे कि महाराज इन्द्र ने चन्द्रकुमारी की इस सुन्दरता को देखकर नन्ही २ बून्दों से दिल्लगी करनी आरम्भ कर दी अथवा यूं कहिये कि उसकी सुन्दरता को देखकर फूलों की बरसा करने लगे। प्यारे पाठको सावन का महीना भी हिन्दुस्तान ही की स्त्रियों के लिये परमेश्वर ने बनाया है बूंदों का पड़ना था कि सुरीले सुरों में बारहमासे गाने की आवाजें आने लगीं। इस समय चन्द्रकुमारी ने पद्मचन्द्र से प्रसन्न होकर यह कहा कि चलो आज तो झूला झूलें।

गर यार मय पिलाय तो फिर क्यों न पीजिये।
जाहिद नहीं मैं शेख नहीं कुछ वली नहीं ॥

फौरन ही दोनों कमरे के बाहर जो बरामदे में झूला पड़ा हुआ था उसपर झूलने लगे। चन्द्रकुमारी की आवाज बिधाता ने सुरीली बनाई थी और वह कभी २ पद्मचन्द्र को गा कर भी सुनाया करती थी इसी लिये

आज भी बाबू पद्मचन्द्र ने उससे कहा कि प्यारी कुछ गाना जरूर चाहिये।

चन्द्रकुमारी--जो आज्ञा, ऐसा कहकर चन्द्रकुमारी गाने लगी।

आई सावन की बहार, सइयां आओ झूला झूलें, आई सावन की बहार। मैं साजन संग कजरी गाऊं, आओ पिया तुम्हें गले लगाऊं॥ नन्हीं २ बरसे फुहार, तन मन वारूं, जिया निसारूं, जोबन वारूं, साजना, आई सावन की बहार, कजरी गावें, झूला झूलें आई सावन की बहार॥

पाठकगण! जिस लहजे में चन्द्रकुमारी ने यह राग गाया उसका आनन्द उन्हीं को आ सकता है जिन्होंने वह समय आंखों से देखा था। क्योंकि जो गाने के जरूरी सामान थे वह सब मौजूद थे अर्थात् इस सुन्दरी का एकान्त मिलन और फिर बारिस की छमाछम बस यूं कहिये कि ऐसा समय था जो बड़े भाग्य से ही किसी को प्राप्त होता है।

जब लुफ्त जिन्दगी है जो अब्र हो चमन हो।
पेशे नज़र हो शाक़ी पहलू में गुलबदन हो॥

बारी जाऊंरे सांवलिया तो पे वारना रे।

बारी जाऊं रे सांवलिया० ॥ सब सखियां मिल झूला झूलें, अपने पियासे हंस हंस बोलें आओ न सांवलिया तुम पर वारना रे। बारीजाऊं रे सांवलिया०॥ तुम बिन मोको चैन न आवै, काली घटा और जिया डरावै ॥ देखो २ रे सांवलिया जोवन वारना रे। वारीजाऊं रे सांवलिया०

गरज इसी प्रकार चन्द्रकुमारी ने बाबू पद्मचन्द्र को खूब गाना सुनाया और वर्षा भी खूब जोर से होने लगी करीब ११ बजे रात तक दोनों झूला झूलते रहे जब वर्षा बहुत ही जोर से होने लगी और बूंदों की बौछार झूले पर आने लगी तो दोनों उठ कर फिर कमरे में चले गये। ज्योंही चन्द्रकुमारी झूले से उतरी उसको एक छींक आई जिसके कारण चन्द्रकुमारी को वहम पैदा हो गया, कमरे में जाकर दोनों एक पलँग पर बैठ गये परन्तु चन्द्रकुमारी उस समय चुप और उदास हो गई, तरह २ के दिल में ख्याल आने लगे जब यह खामोशी हद से ज्यादे बढ़ गई तो पद्मचन्द्र ने उसका हाथ पकड़ कर कहा प्यारी ! ऐसी उदासी किस लिये।

चन्द्रकुमारी—(ठण्डी सांस लेकर) कहने लगी प्यारे आपसे उदासी किस बात की होती मुझे तो उसी वक्त छींक का ख्याल है, देखिये परमेश्वर अगली तीजों को भी दिखावेगा या नहीं।

बाबू पद्मचन्द्र ने उसको प्यार किया और कहा कि प्यारी! तुम छींक पर इतना वहम करती हो यह सब व्यर्थ बातें हैं और पुराने जमाने के ढकोसले हैं। इस ख्याल को चित्त से दूर करो। प्यारी! जब तक हम तुम जिन्दा हैं इसी तरह आनन्द से बीतेगी।

गरज है कि इसी प्रकार की बातों में बाबू पद्मचन्द्र चन्द्रकुमारी का जी बहलाते रहे किन्तु चन्द्रकुमारी का दिल घबड़ा गया था, फिर भी इसने बाबू साहब की हर तरह की खातिर और इच्छा पूरी की परन्तु उदासीनता से जिसके कारण बाबू पद्मचन्द्र भी जरा निराश से हो गये और चन्द्रकुमारी से कहने लगे, प्यारी!

सुबे तो शाम से गुजरती है,
सब दिलाराम से गुजरती है।
आकबत की खबर खुदा जाने,
अब तो आराम से गुजरती है॥

रात के बारह का घण्टा बजा तब चन्द्रकुमारी कहने लगी कि अगर आप आज्ञा दें तो मैं सो जाऊं। बाबू साहब ने कहा नींद तो मुझे भी आ रही है अवश्य सो रहिये। बस दोनों मिलकर सो गये। परन्तु उस छींक की वजह से दोनों के दिलों में फिक्र सा हो गया था।

पाठको! इस संसार में कोई भी दिन ऐसा नहीं

बीताता ओ सुबे से साम तक आन्द ही आनन्द रहे या दुःख ही दुःख रहे, दोनों का धूपछांह का सा साथ है सुख के पीछे दुःख और दुःख के पीछे सुख लगा हुआ है। यदि केवल आनन्द ही आनन्द रहा करे तो उस आनन्द का लुत्फ न आये और जिन्दगी बेमजा हो जाय, सुख का अनुभव तभी होता है जब दुःख का दर्शन कर लिया जाता है, मिठाई का स्वाद उसी को मालूम है जिसने कभी कड़वे पदार्थ भी खाये हैं, जिसने कभी कड़वी चीज खाई ही नहीं उसको मीठी चीज की कदर नहीं मालूम हो सकती। इसलिये सुख दुख भी परमेश्वर की बरकत समझ कर शान्ति और धन्यवाद के साथ सहन करना बुद्धिमानों का काम है। जो दुःख को ज्यादे दुःख और सुख को ज्यादे सुख समझ कर नहीं भोगते उनका जीवन सदैव आनन्द के साथ व्यतीत होता है और वह संसार के लोभ मोह में ज्यादे नहीं फँसते परन्तु यह काम साधारण मनुष्यों का नहीं। बाबू पद्मचन्द्र और चन्द्रकुमारी दोनों नवयौवनसम्पन्न हैं और जवानी के रङ्ग में रंगे हुए हैं इस कारण यह दोनों इस लोक और परलोक से बेखबर होकर अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं इन पर दुःख सुख का ज्यादे असर पड़ना कोई आवश्यकीय बात नहीं है परन्तु सोते समय दोनों के दिल में उस छींक का वहम हो गया था इस कारण रात को चन्द्र-

कुमारी स्वप्न में भी देखती है कि उसको कई आदमी चारपाई पर रस्सों से कस कर जबरदस्ती किसी तरफ जल्दी २ लिये जा रहे हैं और वह बहुत उपाय करती है कि किसी प्रकार अपने आपको छुड़ा कर वहां से भाग जाऊं परन्तु सब निष्फल होता है जब कुछ उपाय न चला तो एक दम बहुत जोर से रोती है और चिल्लाती है कि इतने में बाबू पद्मचन्द्र जिनको अभी नींद भी न आई थी चन्द्रकुमारी का हाथ पकड़ कर कहने लगे—"प्यारी क्या मामला है क्यों रोती हो, इतना कहते ही चन्द्रकुमारी की भी आंख खुल गई वह इस समय ऐसी भयभीत हो रही है कि मुंह से बात भी नहीं निकलती सब शरीर कांप रहा है आंखों में आंसू जारी हैं। जब बाबू साहब ने उसको प्यार किया और आंसू पूंछे तब उसको कुछ धीरज हुआ और कहने लगी मुझे कुछ प्यास मालूम होती है। बाबू साहब ने फौरन ही उठकर पानी पिलाया। चन्द्रकुमारी जल पीकर फिर कहने लगी, "प्यारे आज तो बहुत ही बुरा स्वप्न दीख पड़ा देखिये परमेश्वर कुशल रक्खे।

पद्म०—प्यारी कहो तो सही क्या स्वप्न देखा ?

चन्द्र०—देखती क्या हूं कि मुझे कई आदमी जबरदस्ती चारपाई पर रस्सों से कस कर किसी तरफ जल्दी जल्दी लिये जा रहे हैं और मैं बहुत उपाय करती

हूं परन्तु किसी प्रकार छुटकारा नहीं होता आखिर में जोर से चिल्ला ही पड़ी तब आपने कुछ भी मुझे हिला कर जगा दिया तो क्या देखती हूं कि नहीं आपके पास अच्छी तरह सो रही हूं।

बाबू पद्मचन्द्र ने उसको धीरज दिया और कहा अजी कहीं छाती पर हाथ आ गया होगा इसलिये ऐसा भयानक स्वप्न दिखलाई दिया वरना अभी तो तुमको सोये हुए १५ मिनट भी नहीं बीते मैं तो अब तक जाग ही रहा हूं ऐसे स्वप्नों का क्या फल, स्वप्न तो प्रायः वह सच्चा हो जाया करता है जो प्रातःकाल दीख पड़े और इसमें भी अपना २ ख्याल है मैं तो इन बातों पर विश्वास नहीं करता। चन्द्रकुमारी कहने लगी "मेरा ख्याल भी ऐसा ही है।

गरज इसी तरह थोड़ी बात चीत के बाद दोनों फिर एक दूसरे से लिपट कर लेट गये। मन बड़ा ही चञ्चल है उसको किसी घड़ी चैन नहीं हर क्षण में उसको नई बात का शौक और ख्याल पैदा होता है, सोते, जागते, उठते, बैठते उसे कुछ न कुछ उधेड़ बुन लगी ही रहती है। बाबू पद्मचन्द्र को चन्द्रकुमारी के स्वप्न का ख्याल बहुत हुआ था इस कारण उनको नींद न आई और उसके मन में नई २ बातें पैदा होने लगीं। दिन में सोचने लगे आज त्यौहार के दिन दो अशुभ बातें हो

गई कही ऐसा न हो कि सचमुच कोई विपत्ति मेरी प्यारी चन्द्रकुमारी पर आ पड़े यदि कुछ हो गया तो मेरा जीवन खराब हो गया। कभी सोचने लगे नहीं जी ऐसा नहीं हो सकता यह सब व्यर्थ बातें हैं चन्द्र-कुमारी निर्बल और कोमलांगी स्त्री है इस कारण उसको इस छींक की दहसत से इतनी घबराहट हो गई और सोते समय भी उसको यही ध्यान रहा इसलिये भी यह स्वप्न दीख पड़ा यह व्यर्थ ख्याल है। गरज इसी तरह के ध्यान में इन्हें बहुत देर तक नींद न आई और कोई बात चित्त में स्थिर रूप से न जमी तब अत्यन्त व्याकुल होकर ईश्वर से प्रार्थना करने लगे कि हे पर-मात्मा अपनी कृपा रखना कहीं कोई विपत्ति न आने-वाली हो। ऐसा ध्यान करते २ ही बाबू पद्मचन्द्र को नींद की झपकी लग गई।

प्यारे पाठको! यथार्थ में स्वप्न क्या वस्तु है? इसका लिखना अत्यन्त आवश्यक है असल में स्वप्न उन तमाम ख्यालातों का मजमुआ है जो आदमी दिन में करता है। जो कर्म दिन में करता है वही किसी रूप में बन कर उसके सामने स्वप्न में आकर दीखते हैं। कर्म तीन प्रकार के हैं मनसा, बाचा और कर्मणा अर्थात् एक वह कर्म जो केवल मन में ही विचारे जाते हैं परन्तु बचन और कर्म से पूरे नहीं किये जाते, दूसरे वह जो

मन में विचार कर वचन से पूरे किये हैं और तीसरे वह जिनको यथार्थ में कर्म कहना चाहिये जिनका फल मनुष्य को अवश्य भोगना पड़ता है वह ऐसे कर्म हैं कि मन में कोई बात उत्पन्न हुई और वह वचन और कर्म से पूर्ण कर दी गई। इस प्रकार यह तीन प्रकार के कर्म हैं इनमें से जो मनुष्य दिन में करता है उसी का ख्याल रात को भी पैदा होकर एक सच्ची तसवीर की सूरत में दीख पड़ता है। इसी प्रकार जो ख्याल मनुष्य अपने मन में सोते समय रखता है वही उसके सामने मौजूद रहते हैं। ऐसे स्वप्न मन की चञ्चलता से दीखते हैं और इनका कुछ फल भी नहीं होता। परन्तु ऐसे स्वप्न जिन बातों का ध्यान मनुष्य के चित्त में न हुआ हो और शान्त चित्त में सोते समय अपने मन में विचार किया जाय तो वह प्रश्न समान हो जाता है और जो कुछ उत्तर उसका स्वप्न में मिलता है वह प्रायः सत्य हुआ करता है। पाठकगण! बाबू पद्मचन्द्र को भी सोते समय चन्द्रकुमारी की छींक और उसके स्वप्न का ध्यान था इस कारण आपको भी एक स्वप्न दिखाई दिया कि "एक बड़ी कोठी में वह और चन्द्रकुमारी बड़े आनन्द में मग्न होकर किसी उत्सव की खुशी मना रहे हैं, मकान में तरह २ के झाड़ फानूस आदि की रोशनी जल रही है, हर जगह सब्ज मखमल का फर्स बिछ रहा है मकान के

सहन में बहुत बड़ा हौज पानी से भरा हुआ है, चारों ओर सुगन्धित फूलों के गमले यथा स्थान पर रक्खे हुए हैं हौज के चारों ओर फुलवाड़ी लगी हुई और उनमें संगमरमर की पूरी तसवीरों के फुहारे छूट रहे हैं। सहन के चारों तरफ चार बरामदे हैं एक में सावन भादों का समा बन्धा है चारों तरफ ताड़ के पौहदे लगे हैं, टीन की छत लगी हुई है जिसपर चारों ओर पानी का नल लगा हुआ है, इन नलों के द्वारा जो पानी टीन पर से आकर ताड़ के पौहदों पर गिरता है सो ऐसा मालूम पड़ता है कि बड़ी जोर से मूसलाधार पानी बरस रहा है, दूसरे बरामदे में सिमले का पहाड़ बना हुआ है इसमें इश्क पेचे की बेल ऐसी फैली हुई है कि कहीं जरासा छिद्र दिखाई नहीं देता, तीसरे बरामदे में अंगूर की बेल छा रही है और अंगूर के खोसे ऐसे लटक रहे हैं कि जैसे कोई मकान मोतियों की लड़ों से सजा हुआ होता है, चौथा बरामदा जो कोठी के आगेवाले हिस्से में वह पश्चिमीय बनाव श्रृंगार से ऐसा सजा हुआ है कि मुखसे वाह वाह निकल ही जाती है, हरेक चीज ऐसी उत्तम और सुन्दर मालूम होती है कि दृष्टि फेरने को चित्त नहीं चाहता। सब्ज मखमल का फर्स, सब्ज झाड़ फानूसों की रोशनी और सब्ज पौशाक पहने हुए तसवीरें लटक रही हैं तथा चन्द्रकुमारी भी सब्ज

पोशाक से सजी हुई एक पलँग पर जो बरामदे के बाईं ओर बिछा हुआ है जिसपर सब्ज़ बानात का गद्दा पड़ा है चन्द्रकुमारी मय बाबू पद्मचन्द्र के उसपर बैठी हुई फुहारों का तमाशा, बाग की शैर कर रही है। गरज़ यह है कि वहां ऐसा समा है कि जिधर निगाह उठाओ सब्ज़ ही सब्ज़ दीख पड़ता है। थोड़ी देर के आनन्द प्रमोद के बाद दोनों बाहर के बरामदों की शैर को निकले। दोनों गलबहियां डाल कर धीरे २ पहले सहन में टहलते रहे फिर सावन भादों की शैर की बाद में शिमले का आनन्द उठाया और फिर तीसरे बरामदे में पहुंचे जहां सब्ज़ अंगूरों के खोसे मोती समान लटक रहे थे, कुछ चक्खे और कुछ खाये जब इस तरह बाग की शैर से तबियत भर गई तो फिर कोठी के भीतर चले गये यहां की सजावट का हाल तो निहायत ही अनोखा है सारा कमरा शीसे के सामान से सजा हुआ है, दीवारों पर सुनहरा काम ऐसा हो रहा है कि बुद्धि चकरा जाती है, दीवारों में जो अलमारी लगी हुई हैं उनमें हीरे और जवाहरात सुनहरी और रूपहली का सामान इस कदर भरा हुआ है कि जिससे मालूम होता है कि यह किसी राजा महाराजा का राजमन्दिर है जो तसवीरें हैं वह निराले रङ्ग ढङ्ग की लाजवाब हैं। गरज यह है कि इस कमरे को देखकर परमात्मा की कुदरत नज़र आती है।

जब इस कोठरी की शैर करते बहुत समय बीत गया तब चन्द्रकुमारी ने बाबू पद्मचन्द्र से कहा बाबू साहब ! इसका मालिक कौन है । बस इतना कहना था कि एक मनुष्य ४५ वर्ष की अवस्था का नाटा कद सांवली सूरत मामूली पौशाक पहने हुए इस तरह आता दिखाई दिया जैसे कहीं दूर की मंजिल करके आया है और चेहरे पर घबराहट के चिन्ह थे। बाबू पद्मचन्द्र और चन्द्रकुमारी इस मनुष्य को देखकर भयभीत हो गये, दोनों के दिल में ख्याल पैदा हुआ कि जरूर कहीं न कहीं इस आदमी को देखा है लेकिन ठीक २ याद नहीं पड़ता कि यह कौन साहब हैं और कहां रहते हैं । वह मनुष्य इन दोनों को देखकर बहुत नाराज मालूम हुआ और उसने तुरन्त ही अपने नौकरों को आवाज दी कि दोनों को बाग से ले जाकर अलग २ कैद कर दो । बाबू पद्मचन्द्र और चन्द्रकुमारी दोनों इस तरह एक दूसरे से अलग रक्खे गये, अब न वह मिल सकते हैं और न बात चीत कर सकते हैं, न वह बाग है और न वह शानदार कोठी है महीनों का अर्सा हो गया एक दूसरे की सूरत को तरस रहे हैं । आमने सामने दोनों कैद हैं जब कभी मौका मिला तो चोरी छिपका दोनों कभी कोई बात इशारों में कर लेते हैं नहीं तो सख्त पहरा लगा हुआ है । जब चन्द्रकुमारी बहुत

हताश हो गई और कोई सूरत छूटने की नहीं दीख पड़ी तो उसने मजबूर होकर हाथ में जो हीरे की जड़ाऊ अंगूठी पहने हुए थी उस अंगूठी में से हीरे के नग को निकाल कर खालिया और अगले दिन अपनी जान खो दी। जब पद्मचन्द्र ने देखा कि जिस स्थान पर सिवाय पहरेवालों के कोई न रहता था वहां आज सैकड़ों आदमियों की भीड़ लगी है इसका क्या कारण है तब किसी ने आकर सब हाल सुनाया, थोड़ी देर के बाद उन्होंने चन्द्रकुमारी की लाश को लोगों के कन्धों पर देखा और इसके पश्चात् स्मशान भूमि में चन्द्रकुमारी की लाश को जलते हुए देखा। इतने ही में बाबू पद्मचन्द्र एक साथ बड़ी जोर से चीख मार कर हाय हाय करते हुए जाग उठे। देखते क्या है कि चन्द्रकुमारी आनन्द से उनकी बगल में सो रही है।

घड़ी ने फौरन ही ४ का घण्टा बजाया न वह बाग है न वह महल है, न वह कैदखाना है और न स्मशान भूमि है जैसे रात को दोनों सोये थे वैसे ही पलँग पर दोनों सो रहे हैं।

प्यारे पाठको! ऐसे भयानक स्वप्न को देखकर कोई मनुष्य ऐसा नहीं जो घबरा न जाय। अब बाबू पद्मचन्द्र को नींद न आई और करवटें बदलते रहे। जब स्वप्न का ख्याल आता था एक साथ सारा शरीर कांप उठता

था । उनपर उसका ऐसा खौफ छा गया था कि अकेले पड़ना कठिन हो गया इसलिये उन्होंने चन्द्रकुमारी से बात चीत करने के लिये जगा लिया और सुबे होने तक दोनों इधर उधर की बातें करते रहे । परन्तु पद्मचन्द्र ने चन्द्रकुमारी से अपने स्वप्न का हाल न कहा दो चार दिन योंही गुजर गये परन्तु बाबू पद्मचद्र की उदासी कम न हुई और वह किसी काम करने के लायक न रहे । यद्यपि चन्द्रकुमारी ने उनसे कई बार इस उदासी का कारण पूछा परन्तु वह झूट सच बोल कर बात को योंही टाल देते रहे क्योंकि चन्द्रकुमारी कहीं मेरे स्वप्न का हाल सुनकर और भी न घबरा जाय । परन्तु उसे चैन कहां न रात को नींद न दिन को आराम बाबू पद्म-चन्द्र की उदासी में उसका मुख कमल मुरझाने लगा ।

दसवां परिच्छेद ।

सब दिन एक समान नहीं होते, सदैव सुख नहीं रहता, एक दिन सुख दुःख दोनों का आना अवश्य होता है, साहू बैजनाथ जी के बाहर चले जाने के कारण बाबू पद्मचन्द्र और चन्द्रकुमारी में बहुत ही कुछ प्रेम बढ़ गया है यहां तक कि प्रेम अपनी सीमा से बाहर निकल गया जिसका विस्तार लिखना अत्यन्त कठिन है और जहां तक हो सका लिखा भी जा चुका है इससे अधिक

प्रेमी मनुष्य स्वयं भी अनुमान कर सकते हैं। जिस काम की सीमा नहीं रहती वह शीघ्र ही प्रकट हो जाया करता है। चन्द्रकुमारी और बाबू पद्मचन्द्र की प्रीति का हाल धीरे २ साहू बैजनाथ के नौकरों तथा और आदमियों पर प्रकट होने लगा, प्रायः धीरे धीरे और नौकर चाकरों में इन्हीं के प्रेम की चर्चा होनेलगी।

यहाँ तो यह चर्चा चलही रही थी के इसी बीच में साहू बैजनाथ जी विदेश से वापस आगये। साहू साहब ने आकर चन्द्रकुमारी का कुछ औरही ढंग देखा सज धज निराली रंग ढंग निराला, बात चीत निराली, बात बात में बाबू पद्मचन्द्र की तारीफ, बात बात में बाबू पद्मचन्द्र का जिकर करने लगी तबतो साहूसाहब को सन्देह हुवा कि हे ईश्वर ? यह मामला क्या है अवश्य कुछ दाल में काला है। साहूसाहब तो इस संशय में पड़े हुए थे कि इतने ही में साहूसाहब के नौकरों और और धीरे के दोचार मनुष्यों ने बाबू पद्मचन्द्र और चन्द्रकुमारी की प्रीति का हाल साहूसाहब से कह दिया जिसको सुनकर साहूसाहब को औरभी पूरा निश्चय हो-गया। अब तो साहू बैजनाथ को इतनाक्रोध आया कि जिसका कुछ ठिकाना नहीं। चन्द्रकुमारी से बहुत कुछ कहा और नाराज हुए परन्तु बाबू पद्मचन्द्र के साथ बुद्धिमानी से काम लिया अर्थात् उनसे कुछ न कह कर

सिर्फ बेरुखी की बातें करने लगे। इस बेरुखी को देख कर बाबू पद्मचन्द्र को भी संदेह होने लगा। पाठको! कहावत है कि "चोर की दाढ़ी में तुनका।" संदेह के होते ही बाबू पद्मचन्द्र ने भी कुछ दिनों के लिये लोक लज्जा के वश आने जाने में कमी करना उचित समझा।

यह इश्क फितना वो शय है कि जिसके
नाम की दौलत। सुखाता है दरख्तों
को लिपटना इश्क पेंचा का॥

इधर बाबू पद्मचन्द्र के वियोग में चन्द्रकुमारी की अजीब दशा होने लगी यह दिन रात शिर पटक पटक कर रोने लगी खाना पीना छोड़ दिया, मुखकमल मुरझाने लगा वो शरीर निर्बल होने लगा, बाबू साहब से मिलने के अनेक उपाय सोचने लगी परन्तु परतन्त्रता और लोकलज्जा के कारण एक भी उपाय सफल न हो सका हार मान इस दुःख में दुखी हो विचारने लगी कि हे ईश्वर! यह दुःख कैसे सहूंगी।

जो मैं ऐसा जानती, प्रीति किये दुःख होय।
जगत ढंढोरा पीटता, प्रीति न करियो कोय॥

हे विधाता! मैंने तो किसी को दुःख नहीं दिया फिर मुझपर इतना कष्ट क्यों, नहीं २ मैं भूली इसमें ईश्वर

का कुछ दोष नहीं यह सब मेरे ही कर्मों का फल है जो कुछ प्रारब्ध में लिखा है वह अवश्य भोगना पड़ेगा।

लिख दिया कातिबे तकदीर ने पशानी में।
सिर्फ गम खाया करो इश्क को मेहमानी में॥

मगर हाय अफसोस सब्र तो नहीं होता करूं तो क्या करूं।

हम रो गर्दिशे तकदीर क्या क्या रंग लाती है।
जो देखे दुख न आंखोंसे वह सब अब यह दिखाती है॥

सच है तकदीर का कोई साथी नहीं है, सब अपने अपने मतलब के दोस्त हैं। हे प्यारे! क्या आपको भी मेरे कष्ट पर दया नहीं आती, आप तो मेरे जरा से दुःख से दुःखी हो जाते थे, जरा मैं आपके उठने पर रोने लगती थी तो आप मुझे गले लगा कर रूमाल से मेरे आंसुओं को पोंछने लगते थे। क्या वह प्रेम न रहा या अब वह मैं न रही अथवा अब वह आप न रहे, क्या इतनी जल्दी मुंह मोड़ लिया, आपसे तो ऐसी आशा कदापि नहीं थी फिर ऐसी अदया क्यों? क्या लोक लज्जा का भय है, यदि लोक लज्जा ही का भय था तो पहले क्यों न विचारा था, पहले इस पन्थ में क्यों कदम रखा था, मैंने तो पहले कहा था कि प्रेम का परिणाम बुरा है, जब आपका ध्यान कहां था।

अफसोस है यह मुझको तू यार भूल जाय।

वोह शौक वोह मुहब्बत वोह प्यार भूल जाय॥

प्यारे! आपने क्या २ वचन दिये थे क्या वह सब भूल गये, ऐसी भी भूल क्या प्रेम भी भूल ने की चीज है भूल जाओ, प्यारे भूल जाओ, कब तक भूले रहोगे, मत आओ प्यारे मत आओ।

तुम न आओगे तो क्या मौत भी न आयेगी।

रास्ते रोक दिये होंगे कज़ा के तुमने॥

प्यारे कभी तो याद आवेगी, मगर फिर याद आई तो क्या विरहानल तो अब हृदय को भस्म करे देती है, क्या जब मेरे प्राण निकल जांयगे तब आकर मृतक शरीर को देखोगे।

(बाबू पद्मचन्द्र का चित्र चन्द्रकुमारी के कमरे में लगा हुआ है, चित्र की ओर देखकर) हे चन्द्रकुमारी के जीवन सर्वस्य! हे प्राणनाथ! भले ही तुमने चन्द्र-कुमारी को त्याग दिया परन्तु आकर देखो तो सही चन्द्रकुमारी तुम्हारी मूर्ति को हृदय में धारण करके आपके ध्यान में लगी है। चन्द्रकुमारी ने तुम्हारे सुख से लूट कर जगत् के समस्त सुखों से मुंह मोड़ लिया है। बस अब केवल यही इच्छा बाकी है।

तुम अगर आओ तो अभी निकल जांय,

वोह हसरतें जो रहती हैं महमांकी तरह।

या

दिल यह कहता है तनहा अगर वो मिल जांय।
न छाड़ना कभी जो भर के प्यार कर लेना॥

अथवा

या दर्द दिल का दूर हो या दिल को ताव हो।
किस्मत में जो लिखा है इलाही सिताब हो॥

यों ही दिन बीतने लगे चन्द्रकुमारी दिन रात अपने लोगों में उदास रहने लगी, जब जी घबराता किनारे बैठ कर खूब रोती और आह भरने लगी, जब घर के आदमी बहुत पूछते तो यह कहकर टाल देती कि मैं बीमार हूं मुझको मत छेड़ो, और फिर चिल्लाने लगती रात भर पड़ी २ रोया करती, सारा बिस्तरा भीग जाता, जब कोई पूछता कि तुम्हारा बिस्तरा तर क्यों है तो कहती कि बुखार उतरने पर पसीना आया था उसी से भीगा है, कभी बहुत सी स्त्रियों के पास बैठकर जी बहलाने के लिये ज्ञान की बातें किया करती कि यह दुनियां कुछ नहीं है, जीवन का कोई भरोसा नहीं है हरदम मौत सामने खड़ी है यह भी नहीं मालूम कब मर जाना है, तिसपर भी लोगों को कुछ ध्यान नहीं है, मैं तो दिन रात मरने के ही सोच में रहती हूं इससे रोना आता है। योंही चन्द्रकुमारी दिन रात बैठकर बातें किया करती, रात को खूब चिल्ला २ कर रोती, कोई

पूछता तो कहती कि बीछू ने डङ्क मारा है। रोज यही कैफियत रहने लगी, कभी कोठे पर चढ़कर चारों ओर को देखती और पागलों की तरह व्याकुल हो जाती।

न था आराम नज़ बीमार मुहब्बत को।
जो इस करवट में हसरत थी तो उस पहलू में अरमां था।

योंही दिन पर दिन बीतते जाते हैं क्योंकि समय तो किसी का बन्धुआ है ही नहीं उसको किसी के दुःख की क्यों परवाह होने लगी है, वह तो अपने समय पर बीतता ही है, कल जो सरोवर कमल कुमुदों से शोभित था आज वहां सूखा पड़ा है। कल जहां चन्द्रमा का पूर्ण प्रकाश था आज वहां घोर अंधकार छा रहा है। क्षण परिवर्त्तन शील जगत् प्रपञ्च में प्रति दिन परिवर्त्तन की तरगें उठा ही करती हैं परन्तु चन्द्रकुमारी के दुःख का परिवर्त्तन न हुआ उसे वही बाबू पद्मचन्द्र के वियोग की बिरहानल में जलना पड़ा है, और दुःख सागर में गोते खाना पड़ा है। पाठको! सच है बिछड़ने का दुःख वही जानता है जिसने भोगा है।

जुदा किसी से किसी का गरज हबीब न हो।
यह दाग वोह है के दुश्मन को भी नसीब न हो॥

चन्द्रकुमारी वही वियोगी रंग में रङ्गी है, एकान्त में बैठी २ कभी रोती है और कभी वियोग की गजलें और शेर पढ़ती है।

चन्द्रकुमारी—हे प्यारे !

तेरा जाना तो अब जाना जहांमें मौत का आना।
रवाना होगी मेरी जान पहले तेरी रुखसत से ॥
दम निकलता है दिखादे मुझे सूरत क़ातिल।
दिलकी दिलही में रही जाती है हसरत क़ातिल॥
मसीहा तेरा जाना है कि मेरी मौत का आना।
यह तनसे जां निकलती है कि घरसे तू निकलता है॥
हुए बदनाम लाखों में हजारों गालियां खाईं।
तुम्हारे वास्ते क्या क्या नहीं जिल्लत उठाई हैं॥
वाहरे तेरी मुहब्बत की सजा हमको मिली।
ऐश के बदले हमें आंसू बहाना होगया॥
शीरींका यह कलाम है हरवक्त हर घड़ी।
जिसको खुदा खराब करे वह लगाय दिल॥
जो आना है तो जल्द आओ अबस क्यों देर करते हो
अदम को कूच है अपना अजल लेने को आई है॥
अभी तो खेल समझे हो मगर एक दिन दिखायेगी।
कयामत इसको कहते हैं कयामत ऐसी होती है॥
हमारी शक्ल तेरे गम में पहचानी नहीं जाती।
मुशीबत इसको कहते हैं मुशीबत ऐसी होती है॥

अपनी खिदमत से जो आज़ाद करोगे हमको।
याद रक्खोकि बहुत याद करोगे हमको॥
जिस तरह अपनी बसर होगी बसर करलेंगे।
जिस तरह साम शहर होगी शहर करलेंगे॥
रंज गम हमको दिया तुमने चलो शादरहो।
जो कुछभी किया खूब किया खुश रहो आबाद रहो
मुशीबत हो कोई दम की तो आये सब्र कुछ दिलको
कहां तक हर घड़ी सदमां उठाऊं दर्द हिज्रां का॥
रोते रोते हिज्र में बेर नूर आंखें होगईं।
रफ्ते रफ्ते सूरते नासूर आंखें होगईं॥
अपनी छाती को कबतलक कूटूं।
निकले दमतो अजाब से छूटूं॥

मरके आराम मिले तो मिले,
जिन्दगी में बहुत रंज उठाये साहब।
जुदाई तेरी किसको मंजूर है,
जिमी शख्त और आसमां दूर है॥

लबों पर दम है जरा आके देखलो साहब।
तुम्हारे आने का मैं इन्तजार करती हूं॥

हा प्यारे ! कुछ नहीं सुनते, भला आप क्यों सुनने लगे हैं आपको मेरी क्या परवाह है, न सुनिये मगर मुझसे तो यह कष्ट नहीं सहा जाता, मैं फिर बार बार पुकारती हूं कि सुनिये, यहां आइये, मुझे जुदा न कीजिये वरना मैं भी आपसे जुदा होने का इरादा किये बैठी हूं। फिर आपको पछताना पड़ेगा। एक बार फिर जोर से कहती हूं कि सुनिये वरना यह...(कहती २ मूर्छित हो गई) कुछ देर बाद होश में आकर हा! प्राणनाथ ! अभी आप नहीं आये, हे दुष्ट प्राण ! तुम भी अभी नहीं निकले, निकल जाओ प्राण निकल जाओ प्यारे के बिना अब इस शरीर में मत रहो, जब प्यारे ही ने मुझको छोड़ दिया तो अब आप रह कर क्या करोगे।

ऐसा कहते ही कहते आधीरात होगई, जगत् घोर निद्रा में मग्न हो रहा है, गम्भीर सघन अन्धकारने पृथ्वी को मानो श्याम साड़ी पहरा रक्खी है, जीव, जन्तु, पशु और पक्षी सब ही घोर निद्रा में पड़े सो रहे हैं केवल राजपुरे मुहल्ले में यह चन्द्रकुमारी ही जाग रही है, पासही में चन्द्रकुमारी के गृहस्वामी साहू बैजनाथ गहरी नींद से सो रहे हैं, और लम्बे लम्बे घुर्राटे ले रहे हैं उनको चन्द्रकुमारी की इस हालत की कुछ भी खबर नहीं है। चन्द्रकुमारी की आंखों में नींद कहां उसके हृदय की अग्नि तो दिन रात दहकती रहती

है, उसके हृदय से निकलती हुई भाप सी स्वांस उस घर को झुलसाये देती है। चन्द्रकुमारी से लेटा नहीं जाता वह उठ उठ कर व्याकुल हो होकर इधर उधर घूमती है, कुछ देर के बाद फिर पलंग पर लेट गई मगर विकलता और भी बढ़ने लगी, चित्त को धीरज न हो सका, बाबू पद्मचन्द्र के मिलने का विश्वास चित्त से जाता रहा तब हाथ में से हीरे की अंगूठी को निकाल कर उस हीरे को भक्षण कर लिया।

ग्यारहवां परिच्छेद।

प्रातःकाल का समय है बाबू पद्मचन्द्र नित्य नियम से अपने कारखाने को जाते ही थे किन्तु आज मकान से निकलते ही एक छीं.. हुई और आगे चल कर तरह २ के अपशकुन होने लगे बाबू साहब सोचने लगे कि—हे ईश्वर! आज क्या मामला है, आज क्या होनेवाला है, आज ऐसे अपशकुन क्यों हो रहे हैं, क्या आज कोई दुःखदाई समाचार सुनने में आवेगा, आज एकाएक दिल क्यों धड़कता है, आंखों से आंसू क्यों टपकता है। यह सोचते २ बाबू साहब का ख्याल एक दम चन्द्रकुमारी की ओर गया। पाठको! सच है दिल को दिल से राह होती है क्योंकि बाबू पद्मचन्द्र को सिवाय चन्द्रकुमारी के ध्यान के और कुछ संसार की खबर

ही नहीं इसी कारण बाबू साहब का एकदम ख्याल चन्द्रकुमारी ही की ओर गया और कहने लगे कि क्या आज मेरी प्यारी चन्द्रकुमारी को कोई कष्ट पहुंचा है अथवा और कोई कारण है। शायद मैं कई दिन से उधर को नहीं गया इसके वह कष्ट पाकर बीमार न हो प्रथम चल कर अपनी प्यारी ही के दर्शन करूं।

बाबू पद्मचन्द्र तो चन्द्रकुमारी की ओर को जाही रहे थे कि रास्ते में चन्द्रकुमारी का भेजा हुआ एक आदमी मिल गया और बाबू साहब से कहने लगा—"बाबू साहब आपको साहू साहब के घर बुलाया है अभी चलिये।

बाबू साहब इतना सुनते ही सन्न हो गये और घबरा कर पूछने लगे—"कहो कुशल तो है। चन्द्रकुमारी की तबीयत तो अच्छी है ?"

आदमी—मुझे तो ठीक नहीं मालूम मगर चन्द्रकुमारी आज उदास तो अवश्य है आप शीघ्र चलिये।

पद्मचन्द्र—अच्छा चलो।

बाबू पद्मचन्द्र इस आदमी के साथ साथ बहुत जल्दी २ कदम बढ़ाकर घबराये हुए चित्त में अनेक प्रकार के संकल्प करते हुए चन्द्रकुमारी के मकान पर पहुंचे।

जाकर देखते हैं तो चन्द्रकुमारी अपने कमरे में पलँग पर बदहवास पड़ी है, मुखकमल मुरझा रहा है,

रोते रोते आंखें सूझ कर लाल हो गई हैं, शिर के बाल खुले हुए हैं, जगह जगह से शरीर छिल रहा है और उन जख्मों में से खून टपक रहा है। घर के सब आदमी चारों ओर बैठे हैं।

बाबू पद्मचन्द्र चन्द्रकुमारी की यह हालत देखकर प्रथम तो बहुत घबराये परन्तु फिर धीरज और लज्जा से काम लेना चाहा लेकिन धीरज ने उस समय कुछ काम न दिया यह एकदम मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर पड़े।

बाबू पद्मचन्द्र की यह हालत देखकर घर के आदमी उनकी ओर को झुके और उठा कर होश में लाये। और कहने लगे—"बाबू साहब! आप इतने क्यों घबरा गये?"

पद्मचन्द्र—मेरा दिल बहुत कमजोर है मुझसे किसी की तकलीफ नहीं देखी जाती इस कारण तबीयत घबरा गई थी।

पद्मचन्द्र—(घर के और २ आदमियों से) आज इनका यह क्या ढंग है, कब से तबीयत खराब है।

सब आदमी—बाबू साहब! हम लोग बहुतेरा पूछते हैं परन्तु अब तक कोई सबब बीमारी का नहीं मालूम हुआ, तबीयत खराब, घबराहट और उदासी तो कई दिन से है किन्तु आज रात से तबीयत

विशेष बिगड़ कर यह दशा हो गई है। आप ही पूछिये।

पद्मचन्द्र—(चन्द्रकुमारी के शिर पर हाथ रखकर) कहो जी कैसी तबीयत है? चन्द्रकुमारी को बाबू पद्मचन्द्र के हाथ रखते ही होश हो गया, आंखें खोलते ही एकदम बाबू साहब को सामने देखकर आंखों में आंसू भर कर रोने लगी।

पद्मचन्द्र-रोती क्यों हो तबीयत की हालत तो कहो। चन्द्रकुमारी का कण्ठ भर आया मुख से कुछ न कहा गया। पद्मचन्द्र यह हालत देखकर बहुत घबराने लगे, कलेजा धड़कने लगा शरीर कांपने लगा मगर फिर भी लोक लज्जा के कारण दिल को हाथों से दाब कर कहने लगे—"कहो जी क्यों नहीं बोलतीं?

चन्द्रकुमारी ने फिर भी कुछ उत्तर नहीं दिया। स घर के सब के सब आदमी कहने लगे—"बाबू साहब! आप इनसे अलहदा में पूछिये शायद कुछ बतला दें।

घर के सब आदमी कुछ देर के लिये कमरे से बाहर चले गये तब फिर बाबू पद्मचन्द्र ने चन्द्रकुमारी से पूछा—"प्यारी! बन्दे से ऐसा क्या अपराध हुआ जो नहीं बोलतीं। आज आपकी तबीयत का क्या ढग है,

जरा जल्दी बतलाइये यहां तो दिल घबराया जाता है होश बिगड़े जाते हैं।

चन्द्रकुमारी—हाय! आपकी मुहब्बत और आपकी जुदाई जो न कराये सो थोड़ा है। प्यारे आज मेरी तबियत का ढंग पूछने आये हो। दिन रात मछली की तरह तड़फ २ कर काटती रही जब न आये, अब आये तो क्या जो होना था सो हो गया।

इतना सुनते ही बाबू साहब ने दीवार से शिर दे मारा और बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े। चन्द्रकुमारी की तो हालत खुदही खराब थी मगर फिर भी चन्द्रकुमारी ने बाबू साहब को गिरते ही उठा कर छाती से लगा लिया और कहने लगी—प्यारे अब समय घबराने का नहीं है, चित्त को सावधान करिये जिस लोकलज्जा ने मेरी और आपकी यह गति कराई उसको अब भी न भूलिये। अब बहुत समयथोड़ा है और मुझे आपसे कुछ अन्तिम बात्तालाप करना है सो धीरज से सुनिये और तमाम उम्र उनको न भूलिये, बस यही मेरा अन्तिम काम है।

चन्द्रकुमारी—प्यारे देखिये आज उस तीजों की रात्रिवाले स्वप्न का फल सत्य हो गया प्यारे आपने आना जाना छोड़ दिया मुझसे यह कष्ट सहन न हो सका और मिलने का कोई उपाय भी न बना इस कारण

निराश हो रात मैंने विषपान कर लिया। खैर जो होना था सो तो हो गया मगर अब मेरी लज्जारखना आपका काम है। प्यारे जब आपको मेरे मरने का समाचार मिले उस समय एकदम न घबरा जाना तबीयत को सम्भाले रहना जहां तक हो सके दिल को थाम कर सन्तोष करना किसी को मुहब्बत जाहिर न होने देना, एक साथ रोकर बेहोश न हो जाना, एक साथ घबरा कर न चले आना बल्के जब और सब लोग जमा हो जांय पीछे आप आना, और लोगों की तरह ही आप भी मेरे साथ जाना, साथ जाते हुए रोते मत जाना, मुंह से आह न निकलने देना, घबरा कर जान खोने का इरादा न करना क्योंकि ऐसा करने से लोग आपको मेरा प्रेमी समझेंगे चाहे आप कितना ही इन्कार करेंगे मगर मुहब्बत छिपाये न छिपैगी और आपकी वही लोकलज्जा जिसका आज यह फल हो रहा है नष्ट हो जायगी, दुनियां के लोग तानेजनी करने लगेंगे। इस कारण चाहे आप पर हजार विपत्ति आये तो भी मेरी प्रार्थना और आबरू का ध्यान रखना, मेरी प्रार्थना को कभी न भूलना, अपने और मेरे बचनो पर स्थिर रहना। किसी से कहीं भी मेरा नाम लेकर कुछ जिक्र न किया करना बल्के उस तरफ ध्यान भी न देना, जिक्र सुनकर न रो देना, कहीं मेरी इज्जत को न डुबो देना, कहीं चेहरे

का रङ्ग न बदल जाय, कहीं मुंह से आह न निकल जाय जहाँ तक हो सके बुद्धिमानी के साथ समय को बिताना विपत्ति में धीरज रखना ही बुद्धिमानों का काम है। रंज जुदाई में उठा लेना, तबीयत को और कहीं बहला लेना। और सब से उत्तम यह होगा कि जी में कुछ ख्याल न करके इस मुहब्बत को भुला सपना क्योंकि—

कौन साहब किसी का होता है,
उम्र भर कौन किसको रोता है।

मेरे प्यारे! देखिये फिर मौका मिले या न मिले आओ एक बार गले लग कर खूब प्यार तो कर लो।

आने जां अब बहुत न तरसाओ।
आओ अब तो गले से लग आओ॥
खुदा शाहद किसी की और उल्फत हो।
तुम्हीं पर जान जाती है तुम्हीं पर दम निकलता है॥

प्यारे! आज सब अन्तिम इच्छायें पूरी कर लो, अच्छी तरह से मुझ को देख लो, जो कुछ कहना सुनना होय सो कह सुन लो फिर यह वक्त कयामत तक भी न मिलेगा। बाबू पद्मचन्द्र चन्द्रकुमारी की ऐसी बाते सुनकर खूब जोर से रोने लगे।

चन्द्रकुमारी—प्यारे यह समय रोने का नहीं है,

रोने के लिये तमाम उम्र पड़ी है हमेशा रोते रहा करना मगर मेरा मिलना फिर न होगा क्योंकि फिर तुम कहां और मैं कहां हूंगी।

बाबू पद्मचन्द्र का रोना फिर भी बन्द न हुआ तब चन्द्रकुमारी स्वयं ही उठी और उठ कर रूमाल से बाबू साहब के आंसू पोछने और पान बना कर देने लगी और प्यार करके कहने लगी—"प्यारे! कल को किसको गोद में बिठला कर प्यार करोगे कल तो यह सूरत देखने को न मिलेगी।" मगर—

याद तुमको दिलाये जाते हैं।
पान कल के लिये लगाये जाते हैं॥
देखलो आज जी भरके,
कोई आता नहीं है फिर मरके।
खतम होती है जिन्दगी आज,
खाक में मिलती है जवानी आज।
फल उठाया न ज़िन्दगानी का,
न मिला कुछ मजा जवानी का।

प्यारे! इस दुनियां से सिर्फ आपकी ही एक यादगार साथ लिये जाती हूं मगर आपकी आप ही जानें।

यूं तो मुंह देखे कि होती है मुहब्ब सब को।
अब मैं जानू के मेरे बाद मेरा ध्यान रहे॥

बाबू पद्मचन्द्र घबरा कर रोते २ ठण्ढी सांस लेने लगे और कहने लगे कि हाय प्यारी कहां का प्यार मेरा प्यार तो सदैव के लिये आपके साथ चला;

चन्द्रकुमारी—प्यारे क्यों घबराते हो, क्यों रो रो कर ठण्ढी श्वास भरते हो, क्यों मेरे दिल के टुकड़े किये देते हो, क्यों गम उठाते हो, आंखों से आंसू न बहाओ ऐसे बदहवास मत बने जाओ, सब्र से काम लो अभी तो मैं जिती हूं। एक तो मेरी हालत खुद ही बिगड़ी जाती है जिसपर आपका गम और भी मुझसे सहन नहीं होता। मुझको मरने का कुछ गम नहीं है मगर मुझे सिर्फ फिक्र इतना ही है कि आप के दिल को कौन सम्भालेगा, आपको कौन समझावैगा, इस तरह कौन आपको गले लगावैगा। क्योंकि मेरे होते हुए जब आप इतना घबराते हैं तब पीछे क्या हालत होगी यही अफसोस बाकी है। मगर क्या करूं मेरा कुछ बश नहीं चलता मैं तो जहां तक हो सका आपनी सी निभा चली। अब ईश्वर से यही प्रार्थना है कि आपको शान्ति दे।

प्यारे! अब मेरी हालत बिगड़ती जाती है कहती कुछ हूं निकलता कुछ है, आंखों से आंसू रोके नहीं रुकते, हाथ पांव कांपे जाते हैं दिल को बहुतेरा सम-

झाती हूं मगर नहीं सम्भलता, यद्यपि आप मेरे पास बैठे हैं मगर फिर भी हवास ठिकाने नहीं आते, होश आ आकर बिगड़े जाते हैं दिल में न मालूम क्या क्या ख्याल आते हैं। सच है—

जुदा किसी से किसी का गरज हबीब न हो।
यह दाग वोह है कि दुश्मनको भी नसीब न हो॥

हाय अफसोस क्या क्या समझाऊं समय थोड़ा है समझाऊं या प्यार करूं।

पद्मचन्द्र—प्यारी! दिल को न जलाओ आपकी जान जाय और मैं प्यार करूं और आपका समझाना सुनूं धिक्कार है मेरे जीवन को। प्यारी अब इस ख्याल को दूर कर दीजिये मुझे बिना आपके अब एक पल काटना कठिन है कहां का समझाना और कहां का प्यार; बेहतर यही है कि आपसे पहले मेरा दम निकल जाय।

बारहवां परिच्छेद।

धीरे धीरे चन्द्रकुमारी के शरीर में विष का असर अधिक बढ़ने लगा, चन्द्रकुमारी की सुन्दर सुन्दर बड़े २ नेत्र गढ़े से जाने लगे, मुख कमल मुर्झाने लगा गालों में गढ़े पड़ने लगे, शरीर का रक्त नीला पड़ने लगा, नीले रक्त की वमन होने लगी, तमाम मकान में नीला

ही नीला रङ्ग दिखाई देने लगा, आकाश पाताल सभी स्थान नीलमय हो गया मानों आज नीले रङ्ग ने सभी स्थानों में अपना रूप प्रकट करके अपना राज्य कर लिया है।

बाबू पद्मचन्द्र चन्द्रकुमारी के सिरहाने बैठे हुए पंखा झुला रहे हैं और बार बार रूमाल से अपने आंसू पोंछ रहे हैं। चन्द्रकुमारी की उस समय की अवस्था को देख कर इनका हृदय फटा जाता है मगर लोकलज्जा के वश और चन्द्रकुमारी की आज्ञा के वश होकर खुल कर रोवें तो शायद कुछ शान्ति और धीरज हो जाय मगर चन्द्रकुमारी की आज्ञा उल्लघंन कदापि नहीं कर सकते ऐसा इनका पूर्ण नियम है।

चन्द्रकुमारी की बिगड़ती हुई हालत देखकर अनेक डाक्टर, हकीम और वैद्य बुलाये जाने लगे वह अनेक प्रकार की उत्तम उत्तम विषनाशक चिकित्सा करने लगे। अनेक प्रकार की खिलाने, पिलाने और लगाने की औषधियां व्यवहार की गईं परन्तु "मर्ज बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की" किसी की दवा ने अपना गुण न किया, तबीयत दम पर दम खराब होने लगी कोई आशा बचने की न रही।

तेरहवां परिच्छेद।

आज भादों की काली काली घनघोर घटा आकाश में आच्छादित है, रिमझिम २ टप टप बून्दें पड़ रही हैं संसार भर का मन ऐसे समय में शीतल और प्रसन्न हो रही है परन्तु चन्द्रकुमारी के शरीर में विष की ज्वाला जल रही है आज चन्द्रकुमारी की तबीयत सब दिन से अधिक खराब है, आज बचने की बिलकुल आशा नहीं है, एक एक घड़ी काटना कठिन हो रहा है।

आज चन्द्रकुमारी और बाबू पद्मचन्द्र की सूरत पहचानी नहीं जाती दोनों के चेहरे पीले पड़ रहे हैं, दोनों के मुंह से सिवाय हाय के कुछ निकलता ही नहीं उनको देखकर जितने स्त्री पुरुष वहां मौजूद हैं उनके भी आंसू रोके नहीं रुकते, पानी भी खूब जोर से पड़रहा है मानों इन्द्रदेव भी चन्द्रकुमारी और पद्मचन्द्र के दुःख से दुःखी होकर आठ आठ आंसू रो रहे हैं। सच है चन्द्रकुमारी का वियोग ऐसा ही है।

पाठको! आज चन्द्रकुमारी का हमेशा के लिये वियोग होता है इसलिये जो हालत चन्द्रकुमारी के मकान पर हो रही है उसको विशेष क्या लिखें नाहक आप लोगों का चित्त भी दुःखी होगा। देखते देखते दुपहर ढलने लगा चार बजने का समय आलगा साथ ही साथ चन्द्रकुमारी के प्राणान्त का समय भी आ पहुंचा

चन्द्रकुमारी का शरीर ठण्डा पड़ने लगा, श्वास ऊर्ध्व हो गया आंखों से आंसू निकलने लगे, घर और बाहर के सब आदमी चन्द्रकुमारी को वैराग्य कथा सुनाने लगे और दान पुण्य करने लगे। अब चन्द्रकुमारी के प्राणान्त होने में पांच मिनट की देरी रह गई रोना बन्द होकर धीरे धीरे श्वास भी कम होने लगा। अब चन्द्रकुमारी के प्राणान्त होने में कुछ सेकेण्ड बाकी हैं धीरे धीरे श्वास का आना बन्द होकर अब केवल श्वास कण्ठ में ही मालूम होता है, अब कण्ठ में भी श्वास नहीं मालूम होता अब केवल नासिका से ही वायु निकलती मालूम होती है। इसी बीच में चन्द्रकुमारी के दोनों नेत्रों में से दो बून्द आये और चन्द्रकुमारी ने ईश्वर से लेकर सब स्त्री, पुरुष, बालक और बृद्ध सब को हाथ जोड़ कर अपना अपराध क्षमा कराया। अब नाक से भी वायु निकलती नहीं मालूम होती केवल होठ ही हिलते नजर आते हैं सो एक सेकेण्ड बाद वह भी नहीं मालूम। देखते२ प्राण वायु किधर को निकल गया दोनों नेत्र बाबू पद्मचन्द्र की ओर देखते हुए खुले के खुले ही रह गये, मुख की सुन्दरता वैसी की वैसी ही बनी रही।

बाबू पद्मचन्द्र चन्द्रकुमारी के सिरहाने बैठे हुए एक एक सेकेण्ड की सब हालत टकटकी लगाये हुए देखते रहे। मगर इस समय धीरज रखना महा कठिन था तो

भी बाबू पद्मचन्द्र ने चन्द्रकुमारी की आज्ञा को मान कर लोकलज्जा को निभाया वरना ऐसे समय में बड़े बड़ों के हृदय फट जाते हैं । इसका अनुमान पाठक स्वयं भी कर सकते हैं कि अपने प्यारे के मरने पर कितना दुःख होता है जिससे ज्यादे संसार में और कोई दुःख नहीं हो सकता ।

चन्द्रकुमारी के प्राण के निकलते ही तमाम घर के आदमी हाय हाय करते हुए चन्द्रकुमारी के शरीर पर गिरने लगे और कुछ आदमी जमीन और दीवारों से सिर दे दे मारने लगे और हाय हाय करके चिल्लाने लगे ।

बस यूं कहिये कि देखते २ चन्द्रकुमारी का महल हाहाकार से गूञ्ज गया ।

चौदहवां परिच्छेद ।

चन्द्रकुमारी के कान में तो यह मातम होता ही रहा इतने में धीरे धीरे यह शोक समाचार तमाम मह-ल्ले में फैल गया जिसने सुना हाथ मल कर अफसोस करने लगा, कोई दांतों के नीचे अंगुली दबाने लगा और कोई रोने लगा गरज इस समाचार के सुनते ही सब के चेहरों पर शोक छा गया और सब लोग आ आ-कर चन्द्रकुमारी के मकान पर जमा होने लगे ।

चन्द्रकुमारी के जनाजे का सामान होने लगा, चन्द्रकुमारी को स्नान करा कर उत्तम उत्तम वस्त्र और बढ़िया २ आभूषण पहनाये गये, शरीर में बढ़िया २ इत्र लगाये गये, सुगन्धित फूलों से जनाजा सजाया गया, नीचे बढ़िया वस्त्र लगा कर चन्द्रकुमारी के मृतक शरीर को रक्खा गया और ऊपर बहुमूल्य जरी के काम का शाल डाल कर जनाजे को पूरी तौर से तैय्यार किया गया।

ज्योंही जनाजे को उठा कर सब लोग चले एकदम से फिर घोर कोलाहल मचा घर के सब आदमी हाय हाय करके पीछे भागे और जनाजे को पकड़ कर रोकना ही चाहते थे मगर उनमें इस समय इतनी ताकत न रही थी क्योंकि वह तो पहले ही से अपने शरीर को पटक पटक कर चकनाचूर कर चुके थे। ज्योंहीं वह जनाजे के पीछे भागना चाहते थे कि गश खाकर पटापट जमीन पर गिरने लगे किसी के शिर से, किसी की नाक से, किसी के मुंह से, किसी के हाथ से और किसी के पैर से खून की धारा निकलने लगी। तमाम मकान में खून ही खून दिखाई देने लगा। चन्द्रकुमारी का मरना क्या था मानों कयामत थी।

कयामत इसको कहते हैं, कयामत ऐसी होती है।

जो लोग धैर्य्यवान् थे उन लोगों ने गिरे हुए और

जख्मी आदमियों को उठा कर होश में किया और बहुत कुछ समझाया । फिर सब लोग राम राम सत्य गोपाल नाम सत्य तथा हाय २ करते हुए और छाती को पीटते हुए साथ २ चलने लगे । इस प्रकार थोड़ी देर में धीरे धीरे जनाजा श्मशान भूमि तक पहुंच गया।

सन्ध्या का समय है, पश्चिम दिशा की ओर आकाश में घोर दहकती हुई अग्नि के समान लाली छाई हुई है। सूर्य्यनारायण चन्द्रकुमारी के दुःख से दुःखी होकर अपना मुंह छिपाया चाहते हैं । चकवा चकवी वियोग से दुःखित होकर हाहाकार मचा रहे हैं। पपीहा पिउपिउ की रट लगा रहा है। विचारी कमलिनी प्राणप्यारे के विरह संताप से मुंह छिपा कर सिसक रही है इसकी यह गति देखकर मधुलोलुप भ्रमर भी गुनगुनाता हुआ ताना मार कर चला जाता है।

नदी का किनारा है तटस्थ वृक्षों की छाया से नदी ने मानों श्याम चादर ओढ़ ली है चारों ओर महा भयङ्कर घनाकार जङ्गल है, जगह २ धांय धांय करती हुई चितायें दहक रही हैं, बड़े बड़े शियार, भेड़िये और कुत्ते आदि मांसाहारी जीव झाड़ियो में छिपे पड़े हैं।

प्यारे पाठको ! यह वह स्थान है जहां बादशाह से लेकर दरिद्र तक और रूपवान् से लेकर कुरूप तक तथा बलवान् से लेकर निर्बल तक मट्टी में मिल जाते

हैं। इस स्थान में ही आज चन्द्रकुमारी की चिता चन्द-नादि सुगन्धित काष्टों के द्वारा रची जा रही है, चिता के चारों ओर मनुष्य बैठे हुए हाहाकार मचा रहे हैं। कोई कहता है हा जो चन्द्रकुमारी एक आलीशान कोठी के भीतर बढ़िया सजेसजाये कमरे में मशहरीदार पलंग पर गुदगुदे बिस्तरे पर सोती थी वह आज मर-घट के बीच महा कठिन भूमि में ऊपर नीचे लकड़ियों से दबा कर सुलाई जा रही है कोई कहता है जिस कोमलांगी चन्द्रकुमारी के जरा सा कांटा लगने से घोर पीड़ा होती थी जिसको जरा ठोकर लगने से गश आ-जाताथा उसीचन्द्रकुमारी के शरीर पर आज मनों का बोझा रक्खा जारहा है। जिस चन्द्रकुमारी के शरीर पर बढ़िया २ वस्त्र शोभित होते थे, जिसके शरीर पर बहुमूल्य सुनहरे और जवाहरात से जड़ित आभूषण पह-नाये जाते थे, जिसके शरीर पर सुगन्धित इत्र लगाये जाते थे, जिसका शरीर तरह २ रङ्गीन और खुशबूदार फूलों से सजाया जाता था आज उसी सुन्दरी का शरीर भस्मीभूत होकर मट्टी में मिल रहा है। यह विधाता की अद्भुत गति है।

थोड़ी देर में चिता की अग्नि प्रचण्ड रूप से दहकने लगी तब सब लोग नियमानुसार गङ्गा स्नान करके अपने मकानों की ओर वापिस चले आये। परन्तु बाबू

पद्मचन्द्र इन लोगों से छिप कर श्मशानभूमि की किसी झाड़ी में ही पड़े रह गये। लोगों ने इनको बहुत तलाश किया परन्तु कहीं पता न चला।

पन्द्रहवां परिच्छेद।

कयाम रहता नहीं जमाना घड़ी में
कुछ है घड़ी में कुछ है।
अजब है दुनियां का कारखाना
घड़ी में कुछ है घड़ी में कुछ है॥
जमीने चमन गुल खिलाती है क्या क्या
बदलता है रङ्ग आसमां कैसे कैसे।

आधी रात का समय है, आकाश में घनघोर घटा छा रही हैं, रह रह कर दामिनी की दमक चमक जाती है। अंधेरी ऐसी गहरी है कि हाथ से हाथ नहीं सूझता, बादल के गहरे घरघराहट से मानों पृथ्वी कांप रही है अर्थात् पृथ्वी को भी कम्पज्वर हो गया है। चारों ओर सन्नाटा छाया हुआ है, निस्तब्धता का अटल राज्य है कहीं किसी का भी शब्द सुनाई नहीं देता और इसी श्मशान भूमि के तले एक नदी मन्द मन्द वेग से बह रही है।

इस गम्भीर निशा में इस श्मशान भूमि के बीच धांय धांय करती हुई एक चिता बल रही है जिसकी लाट की चिनगारियां आकाश में दूर दूर तक जा रही हैं। चितागिन से इस अन्धेरे में कुछ कुछ उजेला तो हो रहा है परन्तु भय महाभयानक है ।

ऐसे समय में नदी तट के वृक्षों की झुरमुट में चिता के निकट एक युवक चिता की ओर देख रहा है, ऐसी टकटकी लग रही है कि पलक भी नहीं मारता, उसके मुंह पर घोर चिन्ता के चिह्न व्याप रहे हैं, ललाट पर सिकुड़न पड़ रही हैं, नेत्रों से अश्रुधारा बह रही है, रह रह कर नथुने फड़क रहे हैं प्रति मुहूर्त्त में उसके मुंह की आकृति बदलती है जिससे प्रतीत होता है कि अनेक प्रकार की यातना से उसका हृदय व्यथित और मथित हो रहा है। सामने की चिता में उसकी प्यारी चन्द्रकुमारी का शव जल रहा है। रोते रोते यह युवक एक लम्बी सांस लेकर नीचे लिखा यह जोगिया राग गा रहा है ।

राग जोगिया ।

छिपगया काले बादल में चंदा ।
होगया घोर अंधेर चन्दा ॥
तेरे बिन चन्द्र मुख हाय चन्दा ।

मुद गया मन कुमुद मेरा चन्दा ॥
हाय कैसी करूं कहां मैं जाऊं ।
तेरे बिन हाय मुख मैं दिखाऊं ॥
कौनसी बिधिसे मैं तुझको पाऊं ।
हो गया अस्त सौभाग्य चन्दा ॥
आतीहै जीमें बिषखा मरूं मैं ।
तेरे बिन जीके अब क्या करूं मैं ॥
बिरह की आग से हाजरूं मैं ।
करदिया तन में संताप चन्दा ॥
चन्द्र बिन जैसे सूनी निशा है ।
नीर बिन मीन की ज्यों दशा है
भ्रमर रबि बिन कमल में फंसा है ।
तेरे बिन यह दशा मेरी चन्दा ॥
प्यारी प्यारी सी बांकी वो झांकी ।
टेढ़ी चितवन वो तिरछी निगाहकी ॥
दो दिखा भोली सूरत सदाकी ।
खैंचलूं दिल में तसबीर चन्दा ॥
तेरे बिन जगमें दीखे किछू ना ।

तेरे बिन सारा संसार सूना ॥
दीखता सब जगह दुःख दूना ।
तेरे बिन मैं रहूं हाय चन्दा ॥
विधि ने कैसा गज़ब मुझपै ढाया ।
मेरे चन्दा को मुझसे छिपाया ॥
देखो विधिना की यह दुष्ट माया ।
उठ गया नाम दुनियां से चन्दा ॥
क्या हुवा ऐसा अपराध मेरा ।
किस लिये हाय मुंह मुझसे फेरा ॥
जा किया हाय जंगल में डेरा ।
मिल गया खाक में हाय चन्दा ॥

हाय क्या सोचता था क्या हो गया, हाय प्यारी चन्द्रकुमारी तुमसे कभी ऐसी आशा न थी कि प्रीति करके इतनी जल्दी मुझको तड़फता हुआ छोड़ जाओगी हाय प्यारी जानती थी कि मैं आपके बिना एक पल में व्याकुल हो जाता था मगर फिर भी आपने मेरी मुहब्बत का जरा ख्याल न किया तुमको मेरा जरा तरस न आया, अपनी जान खोई और मुझको तमाम उमर के लिये दाग दिया, हाय अब क्या करूं, कहां जाऊं, कौन इस दिल को ढाढ़स बन्धावैगा, कौन इस दिल

को बहलावेगा, कौन मुस्करा कर प्यार की बातें करेगा कौन खातिर से पलंग पर बिठावेगा, कौन पान बना कर खिलावेगा, कौन मेरे कपड़ों से इत्र लगावेगा कौन मेरी ज़रा सी तकलीफ को सुनकर भागा हुआ आवेगा। हाय, प्यारी ! जब मैं किसी काम को कहता था तब आप ज़रा गर्दन को झटका देकर कह देती थीं बहुत अच्छा सरकार, भला अब सरकार कह कर कौन मेरी बात को मञ्जूर करेगा। हाय प्यारी चन्द्रकुमारी ! अब तुम्हारे बड़े २ रसीले नयन, मधुर मुस्कान, चन्द्रमुख और कोमल शरीर को कहां देखूंगा, कहं ढूंढूगा, हाय इस अग्नि को कैसे बुझाऊं (आकाश की ओर देखकर) हे आकाश ! मुझको स्थान दो तो मैं उड़ कर लय हो जाऊं (पृथ्वी की ओर देखकर) हे पृथ्वी ! तुम फट जाओ तो मैं समा जाऊं, हे अग्नि ! कूदपड़ूं तू मुझे भी भस्म करके धूल में मिला दे, हे नदी ! मैं कूद पड़ूं मुझे भी डूबो दे, हे श्मशान के जीवो ! तुम्हीं मुझपर कृपा करके भक्षण कर जाओ। हाय मैं अब बिना चन्द्रकुमारी के जी कर क्या करूंगा, हाय मुझसे यह कष्ट न उठाया जायगा, हाय जिस चन्द्रकुमारी ने मेरे लिये प्राण दिये मैं उसके लिये न मरूं और संसार का सुख भोगूं धिक्कार है मेरे जीवन पर।

(फिर चिता के निकट जाकर) प्यारी। प्यारी!!

बोलती नहीं, धीरज देती नहीं, मेरे आंसू पोंछती नहीं मुझे छाती से लगाती नहीं। हाय प्यारी मुझे भी अपना सा बना लो, मुझे अकेला न छोड़ो, मेरा कलेजा फटा जाता है जरा तो इसको हाथ से दबा दो, जरा मेरी हालत तो देख लो।

हमारी शक्ल तेरे ग़म में पहचानी नहीं जाती।
बिगड़ जाती है सूरत भी मुसीबत ऐसी होती है॥

हाय! हाय!! कोई नहीं सुनता हे प्राण! अब तुम्हीं सुनो, इस शरीर से शीघ्र निकल जाओ, अब किसकी आशा करते हो अब तो सब आशा निराशा हो गई, अब तुम्हारा संसार में कोई नहीं है, अब तुम्हें ऐसा प्रेम करने वाला कोई न मिलेगा (फिर लम्बी सांस लेकर) हे प्राण निकलो, शीघ्र निकलो (गश खाकर जमीन पर गिर जाता है, फिर कुछ देर बाद होश में आकर) हाय प्यारी! चन्द्रकुमारी! तुमने क्या वचन दिये थे उनमें से एक भी पूरा न करके यूं ही जान गँवा दी, हाय प्यारी! तुमने कुछ भी न सोचा कुछ भी न समझा अपने पढ़े लिखे और चतुरता से कुछ भी काम न लिया और मुझे इस घोर कष्ट सहने के लिये छोड़ दिया। हा प्यारी! कुछ दिनों तो ऐश असरत से दिन बिताये होते।

कर गई अन्धेर वरफ़ा बेवफ़ाई आपकी ।
चार दिन की चांदनी थी आशनाई आपकी ॥

प्यारी ! अगर आपको ऐसा ही करना था तो मुझसे इतनी प्रेम क्यों किया था, मेरे चित्त को क्यों चुराया था, मुझको मरने से क्यों बचाया था । हा अफसोस ! तुमने मेरी तरफ ज़रा ध्यान न दिया । भला अब कहां जाऊं, क्या करूं । (सर्द आह खींच कर आकाश की ओर देखता है और रोता है) ।

अगर हो सब्र को दावा तो बरसे ।
मुक़ाबिल हो हमारी चश्म तरसे ॥

(फिर छाती को कूटता है और शिर को धुनता है) ।

अपनी छाती को कब तलक कूटूं ।
निकले दम तो अज़ाब से छूटूं ॥
मुसीबत हो कोई दम की तो आये सब्र कुछ दिलको
कहां तक हर घड़ी सदमा उठाऊं दर्द हिज्रां का ॥
अय अजल जल्दी छिड़ादे बस न अब ताख़ीर कर ।
खान ये तन भी मुझे अब कैदख़ाना हो गया ॥

फिर गश खाकर ज़मीन पर गिर जाता है और—थोड़ी देर बाद होश में आकर कहता है—हाय !

इश्क था क्या शै कि जिससे दिल लटकताही रहा।
खार सा सीने में मेरे कुछ खटकताही रहा॥
जिगर के टुकड़े हुए जल के दिल कबाब हुआ।
यह इश्क मेरी जान का कोई अज़ाब हुआ॥

हा सच है—

शीरीं का यह कलाम है हरवक्त हर घड़ी।
जिसको खुदा खराब करे वह लगाय दिल॥

यह शेर कहते इस युवक के हृदय में घोर विरहाग्नि दहकने लगी यह छाती को पीट पीट कर पागलों की तरह न मालूम क्या क्या कहने लगा, घण्टों तक अपने शिर को धुन कर जमीन से दे देकर मारने लगा, अपने शरीर के सब कपड़े फाड़ने लगा फिर हाय प्यारी हाय प्यारी कहता हुआ चिता की बराबर में गश खाकर गिर गया।

पाठकगण! यह तो आप जान ही गये होंगे यह युवक आपके उपन्यास नायक बाबू पद्मचन्द्र हैं।

हा वियोग का दुःख भी अत्यन्त ही कठिन है इसको वही जानता है, जिसने भोगा है दूसरे को इसका अनुभव होना महा कठिन है। ईश्वर किसी को भी इस मार्ग में चलने की बुद्धि न दे यह बड़ा असाध्य

रोग है इसकी चिकित्सा ब्रह्मा से भी नहीं हो सकती। जो इस पन्थ में चला वह इसी का हो गया देखिये न—

तड़फते हैं जिन्हें गैरों को चाहत ऐसी होती है।
खुदा की शान है ऐसों की हालत ऐसी होती है॥
चैन दुनियां में नहीं इश्क के बीमारों को।
नित नया रंज फलक देता है बेचारों को॥

सहस्त्रों मनुष्य भटक २ कर मर गये, पुरूरवा, दुष्यन्त और अनिरुद्धादि ने कैसे कैसे कष्ट उठाये, सहस्त्रों वियोगी योगी बन कर बन बन घूमते फिरे परन्तु अन्त में सुख न पाया। हा मर जाना सहज है परन्तु प्रेमी बनना अत्यन्त कठिन है। प्रेम के पन्थ में जिसने कदम धरा सो मरा और हजारों कष्ट ऐसे उठाये जो वर्णन नहीं हो सकते। घर बार छोड़ना पड़ा, संसार से मुख मोड़ना पड़ा, सजातियों से स्नेह तोड़ना पड़ा, पत्थरों से शिर फोड़ना पड़ा और अनेक कष्ट उठाने पड़े परन्तु अन्त को सुख न पाया। जिस मनुष्य को कामिनी की लट नटखट सांपिनी ने डसा फिर वह कदापि पानी नहीं मांग सकता सिसक २ कर ही मर जाता है। इस प्रेम रोगी को अमृत भी कुछ गुण नहीं करता ब्रह्मा की तो भला क्यासामर्थ्य है। शायद हमारे पाठकों को याद होगा कि हमारी चन्द्रकुमारी ने भी प्रेमारम्भ के समय

कहा था कि "प्रेम का परिणाम बुरा होता है ।" सो आप लोगों ने देखा कि चन्द्रकुमारी तो अपनी जान से गई और बाबू पद्मचन्द्र की क्या गति हो रही है ।

सोरहवां परिच्छेद ।

प्रातःकाल के चार बजने का समय है, शीतल मन्द सुगन्ध युक्त वायु के झोंके सोतों को जगा रहे हैं, उधर पक्षी गण चुहचुहाते हुए मधुर स्वर से प्रभाती गा रहे हैं, साधु महात्मा लोग गङ्गास्नान करके देवाराधन के लिये मन्दिरों में आ रहे हैं। ऐसे समय में एक महात्मा शिर जटा बढ़ाये, तन पर भस्म लगाये, बगल में मृगछाला दबाये, हाथ में गङ्गा जल भरा कमण्डल लिये हुए श्मशान मार्ग से जा रहे हैं। एकाएक इनकी दृष्टि चन्द्रकुमारी की चिता के निकट पड़े हुए उसी युवक बाबू पद्मचन्द्र के ऊपर पड़ी ।

महात्मा (पद्मचद्र के निकट जाकर आप ही आप) क्या कोई इस मनुष्य को वैसेही डाल गया है, यह जीवित है या मृतक जरा देखूं तो सही । (हाथ से नाड़ी देखकर) इसकी तो नब्ज भी नहीं मालूम होती परन्तु हां नाक में से तो कुछ २ ठण्डी ठण्डी वायु निकलती मालूम होती है (गौर से देखकर) यह कौन मनुष्य है, इसकी ऐसी दशा क्यों हुई यह ऐसे निर्जन श्मशान में

इस चिता के निकट क्यों पड़ा है, यह चिता किसकी है । क्या इस मनुष्य का इससे कुछ सम्बन्ध था जिसके वियोग में यह युवक इस दशा को पहुंचा है । ऐसे ही अनेक विचार करते २ बहुत समय बीत गया, ज्यों ज्यों समय बीतने लगा त्यों त्यों युवक का श्वांस और भी धीरे धीरे चलने लगा, यह दशा देखकर महात्मा ने विचारा कि यह तो चला जिस प्रकार हो इसको बचाने का यत्न करना चाहिये । यत्न नहीं करने से यह मर जायगा और हमकोपाप का भागी होना पड़ेगा ।

महात्मा ने कमण्डल में से जल लेकर ज़रा सा युवक के मुख में डाला और नेत्रों पर छिड़का, जल के कण्ठ से उतरते ही युवक ने कुछ आंखें खोलीं तब महात्मा ने फिर थोड़ा सा गङ्गाजल युवक के मुख में डाला, इस प्रकार दो तीन बार मुख में जल डालने से युवक को कुछ चैतन्यता हुई ।

प्रिय पाठको ! इस समय उपरोक्त युवक बाबू प्रफुल्लचन्द्र की अजीब हालत है न वह सरोसाकद है, न वह गुलाब सा मुंह है, न वह हिरन कैसी आंखें हैं, न वह अलबर्ट फैशन के बाल हैं बालों में धूल और मट्टी जमी हुई है, सारा शरीर छिली कर घायल हो गया है, सिवाय आह के और कोई बात नहीं है, और सिवाय रोने के कोई काम नहीं है, कपड़े जो शरीर पर थे वह

कफन की तरह मालूम होते हैं, मरने के निकट हालत हो आई है, लम्बी २ सांसे ले रहे हैं, आंखों से आंसू बह रहे हैं, चेहरे का रङ्ग पीला पड़ गया है, कमजोरी से करवट लेने तक की ताकत नहीं है सिवाय मरने के और दूसरी इच्छा नहीं है।

रोते रोते हिज्र में बेनूर आंखें हो गईं।
रफ़्ते रफ़्ते सूरते नासूर आंखें हो गईं॥

चैतन्यता के होते ही फिर वही प्यारी की रट लगने लगी (आकाश की ओर देखकर) हाय दई तू भी मेरी ओर से ऐसा निर्दई हो गया जो मेरी इस दशा पर तनक भी ध्यान नहीं देता और मुझ अभागे को यह महा कठिन दुःख दिखाता है, अरे पापी निर्लज्ज तेरे कलेजे के टुकड़े २ नहीं होते तू ऐसा कठोर हो गया अरे अन्तर्यामी ले सैंत रख अपने कर्त्तव्य को (फिर ऊर्ध्व श्वांस लेकर) हाय प्राणप्यारी! प्राणवल्लभा!! हा प्राणेश्वरी!!! कहां गई, कहां गई कहां गई, ऐसा कहते ही कहते पृथ्वी पर गिर कर मूर्छित हो गये।

इनके मूर्छित होते ही महात्मा ने अपने हाथों से उठा लिया और अपनी छाती के सहारे गोदमें बिठा कर फिर थोड़ा २ गङ्गा जल मुख में डाल कर चैतन्य किया।

महात्मा—धीरज रख धीरज रख अरे क्या अपना आत्म

घात किये डालता है ऐसी तुझपर क्या विपत्ति है, कौन तेरी प्राणप्यारी थी कह तो सही।

पद्मचन्द्र—क्या तुम बिधाता हो अथवा मेरे दुःख को घटा सकते हो?

महात्मा—विधाता तो नहीं हूं परन्तु विधाता का सेवक अवश्य हूं, धैर्य के साथ जरा हाल तो कहो।

पद्मचन्द्र—हा क्या कहूं —

सिर्फ गम खाया करें दुनिया की महमानी में।
लिख दिया कातिब तकदीर मेरे शानी में॥

मेरा सर्वस्व नष्ट हो गया मुझको अब सारा संसार शून्य दिखाई देता है। जो मेरी प्राणाधार थी वह मुझे अकेला छोड़ कर चल बसी, उसी प्राणप्यारी की यह चिता है। अब सिवाय मृत्यु के कोई कुछ सहारा नहीं तब आप भला बार बार चैतन्य करके मुझे क्यों कष्ट देरहे हैं। शीघ्र प्राणों को निकलने दीजिये, अब यह कष्ट नहीं सहा जाता।

महात्मा—धीरज रख कर और हाल भी तो कहो।

पद्मचन्द्र—और हाल कहने के लिये इस समय मेरी बुद्धि ठिकाने नहीं। इतना कह कर फिर रोने लगे।

महात्मा—देखो भाई बहुत रोदन न करो तुम्हारा सुन्दर रूप और युवावस्था देखकर हमारा मन भी अत्यन्त दुःखित होता है।

पद्मचन्द्र—यह बात आपकी सब सत्य है परन्तु मेरे मन को धीरज कैसे हो, जो आज तक पल भर को भी कभी मुझसे अलग न हुई अब वह मेरे नेत्रों के आगे से ऐसे उठ जाय और मैं जीता रहूं धिक्कार है ऐसे जीवन को।

महात्मा—जो तुमने अपने प्राण खोही दिये त क्या तुम्हारी प्यारी जीवित हो सकती है। वृथा प्राण खोना तो चतुरों का काम नहीं है।

पद्मचन्द्र—मेरी चतुरता सब डूब गई जो मुझको ऐसा मालूम होता कि मेरी प्यारी विषपान करके प्राण त्याग देगी तो उसको अकेला क्यों छोड़ देता मगर हाय "गया वक्त फिर हाथ आता नहीं।"

महात्मा—भाई दैव इच्छा बलवान् है इसमें किसी का वश नहीं चलता अब सिवाय धीरज और धर्म्म के कोई उपाय नहीं। अब शोक और सन्ताप को त्यागो और समझो कि हमारा इसका इतने ही दिनों का सम्बन्ध था। अब शोक को छोड़ो और अपने घर को जाओ।

पद्मचन्द्र—अब मुझको घर जाने से क्या काम है, क्या आराम करने को यह जङ्गल बुरा है, चित्त ने शोक को पसन्द कर रक्खा है जब तक प्राण न निकलेंगे तब तक जङ्गल को ही घर समझूंगा। खाने को

प्यारी का गम और पीने के लिये आंसू बहुत हैं इसी से मेरा पेट भरा रहता है। वहां शिर के नीचे तकिया रखने को मिलता था यहां उसका काम एक पत्थर से निकल जायगा, वहां अच्छे २ कपड़े पहरने को मिलते थे यहां मट्टी से शरीर छिपा हुआ है, वहां मित्रों का साथ था यहां जङ्गली जानवरों की कृपा है फिर यहां किस चीज की कमी है जो मैं घर को जाऊं। वहां एक छोटे से घर में रहना पड़ता था यहां शोक के सिंहासनपर सैकड़ों कोस के जङ्गल की बादशाही करता हूं। फिर यह आराम मुझको कहां मिलैगा।

महात्मा ने अपने चित्त में विचारा कि इसका चित्त तो बेतरह शोकसागर में डूबा हुआ है। इसलिये इसको कुछ वैराग्य कथा सुनाऊं तो शायद इसके चित्त को कुछ शान्ति हो जाय। ऐसा विचार कहने लगे कि--

महात्मा—देखो भाई मैं तुम्हारे भले के लिये कहता हूं आत्मघात करना महा पाप है, तुमने व्यर्थ अब तक अपने जीवन के दिन बिताये हैं, अब तक तुमने अपने को नहीं पहचाना व्यर्थ इस प्रेम पन्थ में पड़ कर शोक मना रहे हो इसलिये मैं तुम्हें समझाता हूं कि—घबराओ मत और मेरे कहने को चित्त लगा कर सुनो देखो तुम्हारा हृदय जो घोर अन्धकार में छिप

रहा है उसमें कैसा प्रकाश हुआ जाता है चैतन्य हो और अपने को सम्भालो।

देखो संसार की सब वस्तुयें जल के बुदबुदे के समान हैं, तुमने मेघ में चपला का प्रकाश तो देखा ही है भला कहो तो उसकी वह चमक दमक कितने क्षण रहती है? कहां से आती है और किधर को जाती है योंही जल बबूला है जल में उठता है और उसी में मिट जाता है फिर उसका कोई चिह्न नहीं रहता। तुम जानते हो मनुष्य मर के क्या होता है जिस शरीर के लिये इतने यत्न होते हैं वह शरीर लकड़ियों के बोझे में रख कर फूंक दिया जाता है फिर तो सिवाय राख के उसका कोई चिन्ह नहीं रहता, जिस शरीर के लिये तुम इतना हाहाकार मचा रहे हो सो क्यों देखने २ इसी प्रकार सब शरीरों की राख की ढेरी बन जायगी अथवा गिद्ध स्यार इत्यादि जीव नोंच नोंच कर खा जांयगे। जिस शरीर की यह गति होती है उस शरीर का तुम इतना मोह करते हो। इसलिये यह सोचो कि यह शरीर जल का बुदबुदा है, बिजली का विकाश है, राख है, मट्टी है और कुछ भी नहीं है।

इतना कहकर महात्मा चुप हो रहे. इधर पद्मचन्द्र ने हाहाकार में भी कमी सी मालूम हुई फिर महात्मा ने कहा—"हे युवक! सुनो सोचो और निश्चय रक्खो

कि इस जगत में कोई किसी का प्यारा है न प्यारी है यह संसार संराय के समान है। इस संसार रूपी समुद्र में भ्रमण करने से मनुष्य के जितने २ सम्बन्ध होते हैं वह सब आपत्तियों के घर हैं क्योंकि अन्त में प्रायः सब ही सम्बन्ध दुःखदायक हो जाते हैं सो उनसे तुम सुख मानते हो यह सब तुम्हारा भ्रम मात्र है। इस संसार में जिनके यहां जो पुण्य मूर्ति स्वरूप और उत्तमोत्तम पदार्थ प्रातःकाल के समय दीखते हैं वह सब सन्ध्या के समय देखने में नहीं आते अर्थात् नष्ट हो जाते हैं इसलिये हे आत्मन् विचार पूर्वक देख और इसका मोह छोड़। पुत्र, स्त्री, बान्धव, धन और शरीरादि सब नष्ट हो जाते हैं और जो हैं वह भी सब अवश्य ही नष्ट हो जायगे फिर वृथा क्यों खेद करता है इस संसार में स्त्रियां न तो किसी के साथ आई और न किसी के साथ जां-यगी फिर वृथा क्यों रो रो कर आत्मत्याग करता है। जैसे पक्षी अनेक देशों से आकर सन्ध्या के समय वृक्षों पर बसते हैं वैसे ही यह प्राणी जन अन्यान्य जन्मों से आ आकर कुल रूपी वृक्ष पर बसते हैं अर्थात् जन्म लेते हैं और जिस प्रकार वह पक्षी प्रभात के समय उस वृक्ष को छोड़ कर अपना अपना रास्ता लेते हैं उसी प्रकार यह प्राणी भी आयु पूर्ण होने पर अपने २ कर्मानुसार अपनी २ गति को चले जाते हैं। जीवों

का आयुर्बल तो अञ्जुली के जल के समान क्षण क्षण में निरन्तर झरता रहता है और यौवन कमल के पत्ते पर पड़े हुए जल बिन्दु के समान तत्काल ढलक जाता है। फिर प्राणी वृथा ही स्थिरता की इच्छा करता है। इस लोक में ग्रह, चन्द्रमा, सूर्य्य और तारे तथा छः ऋतु सब ही जाते हैं और आते हैं परन्तु जीवों के गये हुए शरीर स्वप्न में भी लौट कर नहीं आते फिर शोक सन्ताप करने से क्या होगा। हे युवक! तू किसका मोह करता है भला कौन ऐसा शरीर है जिसके गले में काल की फांसी न पड़ती हो, समस्त जीव काल के वश हैं फिर किसी न किसी दिन तो अवश्य ही वियोग होता। जब प्राणी दुर्निवार कालरूपी सिंह के पांव तले आ जाता है तब इसको ब्रह्मा भी नहीं बचा सकता अन्य मनुष्य की तो सामर्थ ही क्या है। यह काल बड़ा बलवान् है जीवों को पाताल में ब्रह्मलोक में, इन्द्र के भवन में, समुद्र तट, बन के पार, दिशाओं के अन्त में, पर्वत शिखर पर, अग्नि में, जल में, हिमालय में, अन्धकार में बज्रमय स्थान में, तलवारों के पहरे में, गढ़, कोट भूमि, घर, तथा मदोन्मत्त हाथियों के समूह इत्यादि किसी भी स्थान में यत्न पूर्वक बिठाओ तोभी यह काल बलात्कार पूर्वक जीवों के जीवन को हरण कर लेता है इस काल के आगे किसी का भी वश नहीं चलता।